लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

'अंकुर'

छठा अंक 2021

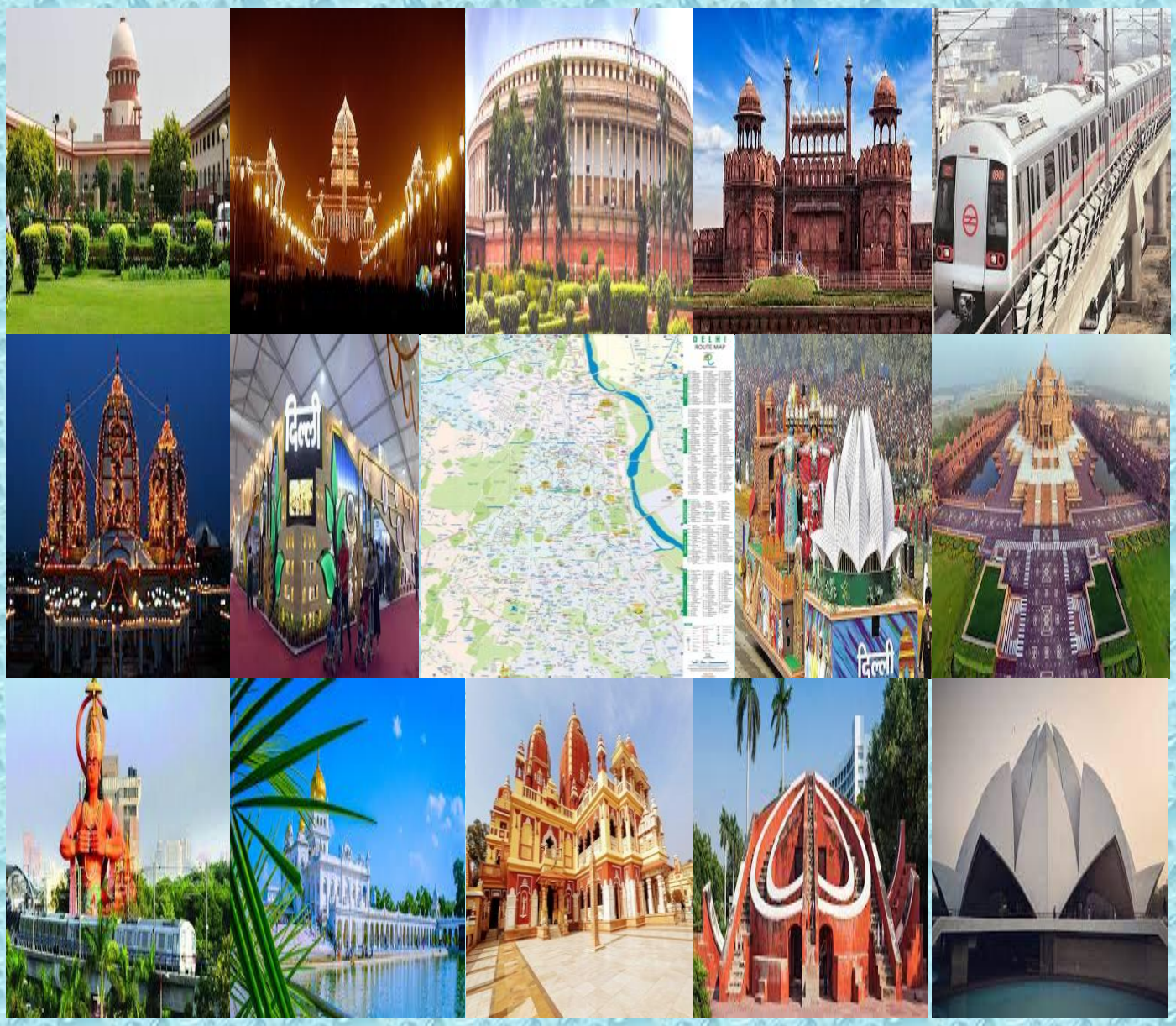

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली - 110002

केवल विभागीय वितरण हेतु

'अंकुर' पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री सुशील कुमार जायसवाल
महानिदेशक लेखापरीक्षा

मुख्य संपादक

श्री अतुल प्रकाश
निदेशक
(प्रशासन/राजभाषा)

संपादक-मंडल

श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(राजभाषा)

श्री संजीव,
हिन्दी अधिकारी

श्रीमती शालिनी दहिया,
कनिष्ठ अनुवादक

कुमारी डिम्पल प्रसाद,
कनिष्ठ अनुवादक

नोट : रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। अतः रचनाओं में प्रकट भाव, दिये गए तथ्यों, संदर्भों तथा मौलिकता के लिए रचनाकर स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संरक्षक का संदेश

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के छठे अंक का विमोचन करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों का राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में सार्थक प्रयास एवं पत्रिका की रचनाएं हिन्दी साहित्य के प्रति प्रेम का प्रतीक हैं ।

पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं इस बात का भी प्रमाण है कि कार्यालय में अनेक साहित्यिक व लेखन प्रतिभाएं हैं ।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ, साथ ही संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को उनके सराहनीय योगदान हेतु साधुवाद देता हूँ । आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार अपना सक्रिय योगदान देते रहेंगें ।

सुशील कुमार जायसवाल
महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय प्राप्ति)

शुभकामना संदेश

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी भाषा का प्रसार एवं उसका विकास करना, संघ का कर्तव्य है । हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण की भावना और संदर्भित अथक प्रयासों ने इसे यह दर्ज़ा दिलाया है । आज राजभाषा को जन भाषा से जोड़ने का दायित्व हम सभी का है । "अंकुर" पत्रिका के इस छठे अंक के प्रकाशन का श्रेय मुख्य रूप से इस कार्यालय के उन अधिकारियों/ कर्मचारियों को जाता है, जिन्होंने इस पत्रिका मे लेख, कहानियाँ, कविताएं, आदि लेखन-सामग्री देकर भरपूर सहयोग दिया है । वे बधाई के पात्र है, क्योंकि उत्कृष्ट रचनाओं से ही पत्रिका में निखार आता है और वह पठनीय व रुचिकर बनती है ।

वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने हमें पर्यावरण की शुद्धता व अपने आस-पास की स्वच्छता का महत्व भी समझाया है और सुधि पाठकों हेतु इससे संबंधित रचनाओं को भी समाविष्ट किया गया है ।

कार्यालय के अधिकारियो/ कर्मचारियों का यह दायित्व है कि वह अपनी ओर से उत्कृष्ट रचनाएँ देकर पत्रिका के प्रकाशन में तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग करें, जिससे राजभाषा की निरंतर प्रगति हो, यही इस पत्रिका का लक्ष्य है ।

अतुल प्रकाश
निदेशक
प्रशासन/राजभाषा
(केन्द्रीय प्राप्ति)

संपादक की कलम से.....

प्रिय पाठकों.....

राजभाषा हिन्दी की सेवा एवं उसके प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित इस कार्यालय की पत्रिका "अंकुर" के छठे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है । वास्तव में यह पत्रिका कार्यालय महालेखापरीक्षक (केन्द्रीय प्राप्ति) नई दिल्ली में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सक्रिय रचनात्मक सहयोग का ही प्रतिफल है । इसकी विशेषता यह है कि इसमें कविताएँ, कहानियाँ, स्वास्थ्यवर्धक लेख व घरेलू नुस्खे, चित्र तथा वर्तमान के ज्वलंत विषयों के लेखों का संकलन हैं, जो विशेषतौर पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं । "अंकुर" का यह आकर्षक अंक राजभाषा हिन्दी के विकास में इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जोड़ कर रखता है । राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे विभागीय पत्रिकाओं के सराहनीय एवं अभूतपूर्व योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए कम है । अतः "अंकुर" के सभी रचनाकारों, सुधि पाठकों एवं उच्चाधिकारियों को मैं उनके सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

भाषा ही आपसी विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है । यह जितनी सरल और सुबोध होगी संप्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होगा । राजभाषा के निरंतर बढ़ते कदम इस बात के साक्ष्य हैं कि वह दिन अब दूर नहीं जब हम सभी चिन्तन, मनन व संप्रेषण का कार्य अपनी मातृभाषा में करके गौरवान्वित महसूस करेंगें ।

हम अपने सभी पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि "अंकुर" पत्रिका का यह छठा अंक भी हमेशा की भांति आपकी आकांक्षाओं एवं अभिलाषाओं पर खरा उतरेगा । इसकी रचनाएँ न केवल रोचक, ओजपूर्ण हैं अपितु ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद भी हैं ।

अंत में "अंकुर" के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं इसके विविध कार्यों से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूँ तथा पाठकों से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि आप अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमारा मार्गदर्शन करें ताकि भविष्य में भी पत्रिका में और नवीन आयामों को जोड़कर इसे और श्रेष्ठ बनाने हेतु प्रयासरत रहें ।

राजभाषा हिन्दी की प्रगति एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित !

निलेश कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
{संपादक}

हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

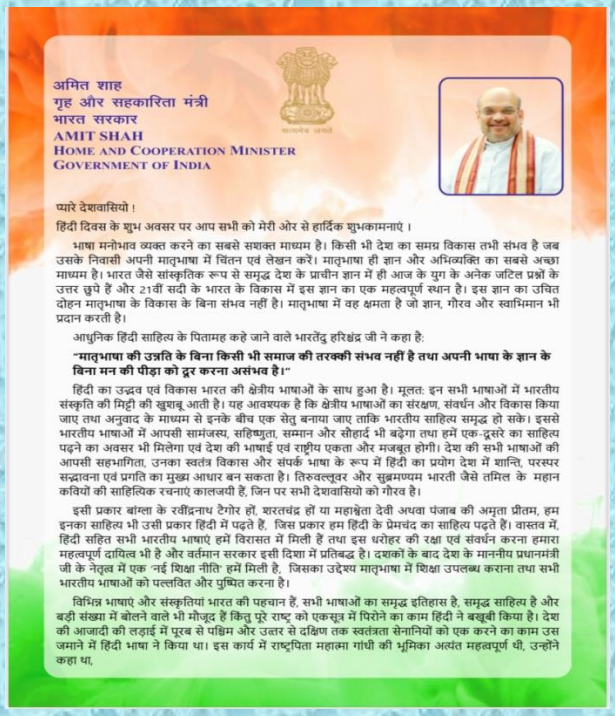

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे | हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

हिन्दी पखवाड़ा 2021 की झलक

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह 2021 में चर्चा करते हुए

माननीय निदेशक (राजभाषा) महोदय अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण सहित सद्भावना दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा लेते हुए

स्वतंत्रता दिवस 2021 के अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकी

कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते कार्मिक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक का संदेश	महानिदेशक लेखापरीक्षा	3
2.	प्रधान संपादक का संदेश	निदेशक (प्रशासन/राजभाषा)	4
3.	संपादकीय	श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव, वरि.ले.प.अधिकारी/ राजभाषा	5
4.	माननीय गृहमंत्री जी का संदेश	---	6
5.	राजभाषा प्रतिज्ञा	---	7
कार्यालय में आयोजित विभिन्न समारोह/कार्यक्रमों की कुछ झलकियां			
6.	हिन्दी पखवाड़ा 2021 की झलक		8
7.	माननीय निदेशक (राजभाषा) महोदय अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण सहित सद्भावना दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा लेते हुए		9
8.	स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत देशभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकी		10
9.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते कार्मिक		11
लेख एवं कहानियां			
10.	कुंभ- एक दर्शन	श्री संदीप कुमार पाण्डेय, स.ले.प.अ.	14
11.	रेलकर्मी का दायित्व	श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव, वरि.ले.प.अधिकारी (राजभाषा)	15
12.	असली सेवा	श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.	16
13.	व्यता की गाथा-श्यामली	श्री हरी बाबू शाक्य, स.ले.प.अ. (ग्वालियर शाखा कार्यालय)	17-18
14.	ईमानदारी का फल	श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.	19
15.	भेदभाव-परिप्रेक्ष्य व असमानता के बहुरूप	श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक	20-22
16.	सन् 3000	मास्टर अभिषेक कुमार आर्य सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.	23-24
17.	दैनिक रियलिटी- ओ.टी.टी.	श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.	25
18.	स्वास्थ्य लाभ	श्री हरीश चंद्र पाण्डेय, वरि. लेखापरीक्षक	26
19.	बाल शोषण- कानून, आँकड़े व कुछ निर्णय	श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक	27-29
20.	विलुप्त होती किताबें	श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.	30
21.	शिमला की रेल	मास्टर कल्प कुमार आर्य, सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.	31
22.	भला मानुष	श्री एन. के. शर्मा, वरि. ले.प. अधिकारी (सेवानिवृत्त)	32-33
23.	घरेलू नुस्खे	श्रीमती चंचल कुमारी, पत्नी श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.	34

कार्यालय परिवार के सदस्यों द्वारा चित्रित चित्र			
24.	चित्र	श्रीमती स्वाति, पत्नी श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव, वरि.ले.प.अ. (राजभाषा)	35
25.	'कोरोना महामारी के दौरान घर पर ही सुरक्षित रहने' का संदेश दर्शाता हुआ चित्र	कुमारी मनस्वी, सुपुत्री श्रीमती मोनिका, स.ले.प.अ.	36
26.	मातृत्व का रेखा-चित्र	कुमारी डेज़ी, सुपुत्री श्री नरेश कुमार वशिष्ठ (स.ले.प.अ.)	37
27.	व्यंग्य चित्र	श्री मिहिर रंजन, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी	38
कविताएं			
28.	जब कोरोना आया था	कुमारी हिमांगी गुसाई, सुपुत्री श्रीमती विनीता कुमारी	39
29.	आओं प्रण करें	श्री संजीव, हिन्दी अधिकारी	40-41
30.	सिपाही	श्री सरजीत सिंह, पिता श्री यजुवेंद्र सिंह, स.ले.प.अ.	42
31.	मेरा खूबसूरत समाज	श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.	43
32.	कुछ लम्हें	श्रीमती कुसुम चौहान, बहन श्रीमती विनीता कुमारी, लेखापरीक्षक	44-45
33.	आपदा या पुनर्रचना	श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव, वरि.ले.प. अधिकारी (राजभाषा)	46
34.	सूखा पत्ता	श्री अमित कुमार जाटावत, लेखापरीक्षक	47
35.	आख़िरी पाती	श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक	48
36.	भारत के वीर	श्री विश्वेन्दु, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	49
37.	पथिक	श्री अमित कुमार जाटावत, लेखापरीक्षक	50
38.	आँखें कहती है	श्रीमती नेहा, एम.टी.एस.	51
39.	जब से मैं बोलने लगी हूँ	श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.	52
40.	"मां" मां में संसार देखा है	श्री अमित कुमार जाटावत, लेखापरीक्षक	53
41.	सोचा भी न था	श्रीमती अर्चना बिंदरू, वरि. लेखापरीक्षक	54
42.	कोरोना और हम	श्री विश्वेन्दु, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	55-56
विविध			
43.	गत वर्ष में कार्यालय से सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं अधिकारीगण की सूची		57
44.	हिन्दी भाषा से संबंधित सूक्तियां		58-59

श्री संदीप पाण्डेय,
स.ले.प.अ.

कुम्भ-एक 'दर्शन'

धर्म एवं अध्यात्म को समझने के लिए अधिकांशत: हमें रुपक, उपमा, अवतारवाद, दृष्टांतों, चिन्हों एवं प्रतीकों का आश्रय लेना पड़ता है। कुम्भ मेले का आयोजन एवं सम्पूर्ण कुम्भ का सार भी इस प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का अपवाद नहीं है। कथा इस प्रकार है कि समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश (कुम्भ) के लिए देवताओं और दानवों मे युद्ध होता है। उस संघर्ष मे अमृत की बूंदे जिन चार स्थानों पर गिरी, वहीं पर कुम्भ आयोजित किया जाता है:- हरिद्वार उज्जैन, नासिक एवं प्रयागराज ।

अमृत तत्व की परिकल्पना हमें एशिया के अन्य धर्मों में भी देखने को मिलती है जैसे - सिख धर्म में अमृत संचार, बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा में अभिषेक के समय अमृत पान आदि।

कुम्भ का वास्तविक दर्शन मनुष्य के शरीर के साथ - साथ मन एवं आत्मा की निर्मलता एवं शुद्धि की उस प्रक्रिया को परिलक्षित करता है जिसकी परिणति हमें मोक्ष की तरफ अग्रसारित करती है । इसी मोक्ष की आशा एवं जीवन मरण के चक्र से मुक्ति की चाह में लाखों लोग कुम्भ में स्नान करते हैं।

यद्धपि कुम्भ निर्विवाद रूप से हिन्दू आस्था का प्रतीक है पर फिर भी यह विशिष्टावाद को बढ़ावा नहीं देता। जिस प्रकार एशिया महाद्वीप के अन्य धर्म एवं पर्व किसी न किसी रूप मे एक सामान्य दर्शन एवं संस्कार साझा करते है उसी प्रकार कुम्भ में भी हमें बहुसांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ देखने को मिलती हैं। जूना अखाड़ा जोकि कुम्भ से संबंधित सभी अखाड़ों मे सबसे बड़ा है, विभिन्न देवी - देवताओं एवं गुरुओं की पूजा करता है। इस अखाड़े में कथित तौर पर बौद्ध एवं मुस्लिम समाज के लोगों को भी सदा से ही उचित स्थान दिया गया है ।

वर्ष 2015 में अपनी महाकुंभ यात्रा के समय दलाई लामा द्वारा कहा गया यह कथन अत्यंत समीचीन प्रतीत होता है, "जहाँ तक हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म का संबंध है दोनों ही शील, समाधि और पांडित्य के दृष्टिकोण से एक जैसे ही हैं। दोनों ही परम्पराओ में ये तीनों मूल समान रूप से विद्यमान है ।"

'आटोबायोग्राफी ऑफ ए साधु- ए जर्नी इन्टू मिस्टिक इंडिया' नामक पुस्तक के लेखक बाबा रामपुरी लिखते हैं, "रूमी (13वीं सदी का फारसी कवि एवं एक सूफी रहस्यवादी) महानिर्वाणी अखाड़े के मुल्तानी मढ़ी से है। उनके गुरु शाह शम्से तबरेज़ को मुस्लिम जगत में महान सूफी संत के रूप में उच्च स्थान प्राप्त है। इसी प्रकार कुम्भ का उदासीन समुदाय अखाड़ा सिखों से संबंधित है। यहाँ हमें सिख दर्शन एवं विश्वास, परंपराओं की झलक मिलती है।

लगभग चार माह तक चलने वाला कुम्भ महोत्सव उन शानदार अखाड़ों, विशाल साधु दलों, पवित्र स्नानों, मंत्रोच्चार एवं धूप-दीप-नैवेद्य के अलावा भी बहुत कुछ है। इसका सबसे बड़ा आकर्षण संभवत: साधारण में असाधारण को देखना है । यह आम जन की प्रार्थना का विस्तार है जो एक तरफ तो परम वैभव एवं दूसरी और चिरस्थायी दुख से परिपूर्ण इस संसार में उनके परम सत्ता के समक्ष पूर्ण संपर्ण को प्रकट करता है । लोग भारत भूमि के दूर दराज के गांवों, शहरों, कस्बों यहाँ तक की विदेशों से भी आते हैं और जाति-धर्म-पंथ-लिंग-रंग आदि भेद भुलाकर एवं एकमय होकर पवित्र स्नान करते है और अपने जीवन में आशा की किरण का संचार करते हैं।

यह लोगों का जमावड़ा और ये सबका एक साथ आना हमारी एकता एवं विविधता की आपसी स्वीकार्यता का परिचायक है और यही बात कुम्भ को विशिष्टता प्रदान करती है जो कि अखण्ड भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशा., जी.ई., सू.प्र. व राजभाषा)

रेलकर्मी का दायित्व

वैशाली एक्सप्रेस गौरखपुर से चल पड़ा था और मैं एक सीट की तलाश में गेट के पास ही टिक गया । अभी सहजनवाँ स्टेशन पार हुआ था कि मेरा बैग हाथ से छूट कर हवा में तैरता हुआ आंखों से ओझल हो गया । मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया । नौकरी संबंधी सारे कागज़ात उस बैग के साथ ही मेरी ज़िंदगी से दूर हो गए ।

मैं बदहवास सा अगले स्टेशन के स्टेशन मास्टर के पास पहुंचा तो उन्होंने जैसे मेरी स्थिति को भांप लिया हो और पहले पानी पिलाया फिर पूछे जाने पर मैंने सारे हाल बताएं ।

पूरी सूचना लिख मेरा मोबाइल नं. मांगकर उन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि वो पूरा प्रयत्न करेंगें कि मुझे बैग मिल जाए लेकिन सरकारी कर्मचारी की उदासीनता को देखते हुए रत्ती भर भी विश्वास न हुआ और मैं किस्मत को कोसता घर आ गया ।

पूरी रात तरह-तरह के सपने आते रहे और क्या-क्या कर सकता हूँ सोचता रहा । कब सुबह हुई मालूम न चला कि तभी मोबाइल पर टिंग बजा । उधर से अनजान आवाज़ थी जिसने कहा कि आप का बैग मिल गया जो फटी हालत में है लेकिन कागज़ात सकुशल है और जाकर स्टेशन से ले लें। यह आवाज़ उसी स्टेशन मास्टर साहब की थी ।

स्टेशन पहुंच कर मैंने उन्हें धन्यवाद कहा और उन्होंने अपना ड्यूटी बताकर हाथ जोड़ लिया । बाहर बैठे अन्य कर्मचारियों ने कहा कि देर रात तक स्टेशन मास्टर साहब बैग की तलाश करवाते रहे।

एक रेलकर्मी का सेवाभाव महसूस कर मेरी आंख भर गयी और उनको पुनः धन्यवाद कर मैं घर को चला गया ।

श्री राकेश गोयल,
स.ले.प.अ.

असली सेवा

आज का दिन अंकुर के लिए बहुत ही खास था। आज वह बहुत खुश था। उसने सुबह ही अपने परिवार के सभी सदस्यों को बोल दिया था कि "हम लोग आज शाम का खाना खाने बाहर रेस्टोरेंट में चलेंगे।" उसके परिवार में उसकी पत्नी, दो बच्चे और उसके वृद्ध पिता जी थे। अंकुर का आज का दिन ऑफिस में भी अच्छा बीता और वह समय से ही ऑफिस से निकल पड़ा और रास्ते से उसने कुछ सामान खरीदा। घर पहुंच कर उसने अपने हाथ-पैर धोएं और कपड़े बदलकर सभी को चलने की तैयारी करने को कहा। अंकुर ने अपने पिताजी को भी बोला, "चलो पिताजी आप भी तैयार हो जाओ।" पर वृद्ध पिता बोले कि तुम लोगों की पार्टी में मेरा क्या काम ? मैं नहीं जाऊंगा, मैं घर पर ही रूकता हूँ। अंकुर ने स्वयं अलमारी से उनके नए कपड़े निकाले और बोला, "पिताजी आप भी चलो।"

वे सब लोग रेस्टोरेंट में पहुँच चुके थे। अंकुर ने टेबल पहले से ही बुक करा दी थी। थोड़ी देर में एक सजा हुआ केक उनकी टेबल पर रख दिया गया। यह देखकर उसकी पत्नी, बच्चे और वृद्ध पिताजी हैरान हो गए और एक दूसरे की शक्ल देखने लगे और पूछने लगे कि आज किसका जन्मदिन है। अंकुर बोला, "आज पिताजी का जन्मदिन है।" चलिए पिताजी केक काटिए.. । वृद्ध पिता की आँखों में आँसू आ गए। फिर केक काटा गया और अंकुर ने अपने हाथों से अपने पिताजी और बाकी सदस्यों को केक खिलाया। फिर अंकुर ने अपने पिताजी को एक कुर्ता-पाजामा भेंट-स्वरूप दिया जो उसने ऑफिस से आते समय खरीदा था।

फिर टेबल पर खाना सजाया गया। खाने के दौरान वृद्ध पिता ने कई बार भोजन अपने कपड़ों पर गिराया। रेस्टोरेंट में बैठे दूसरे लोग वृद्ध को घृणा की दृष्टि से देख रहे थे। अंकुर बार-बार अपने पिता के कपड़ों और मुँह को साफ कर रहा था। खाना खत्म होने के बाद अंकुर वृद्ध पिता को वॉशरूम ले गया और उनका चेहरा और कपड़े साफ किए, चश्मा पहनाया और फिर बाहर लाया। रेस्टोरेंट में यह दृश्य सभी लोग देख रहे थे। फिर उन्होंने खाने का बिल चुकाया और जाने लगे।

तभी एक अन्य वृद्ध ने उन्हें पुकारा- बेटा! तुम यहाँ कुछ छोड़ कर जा रहे हो। अंकुर ने इधर-उधर देखा और बोला नहीं चाचा.. मैं तो कुछ भी छोड़ कर नहीं जा रहा हूँ। वृद्ध आदमी बोला, बेटा तुम यहां हर पुत्र के लिए एक शिक्षा और हर पिता के लिए एक उम्मीद छोड़कर जा रहे हो। आज तक मैंने ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा। अक्सर लोग अपने बूढ़े माता-पिता को अपने साथ बाहर घुमाने कभी नहीं ले जाते हैं। उन्हें उन को साथ ले जाने में अपना अपमान महसूस होता है। वे अपने माता-पिता से कहते हैं- आपसे ना तो ठीक से चला जाता है, ना खाने पीने का सलीखा है। आप घर पर ही रहो। लेकिन लोग भूल जाते हैं कि जब वे छोटे थे, तो उनके माता-पिता उनको अपनी गोद में उठा कर, कंधे पर बैठाकर ले जाया करते थे। जब भी उनको खाना खाने में दिक्कत होती थी तो मां उनको अपने हाथों से खाना खिलाती थी और गिर जाने पर डाँटने की बजाय प्यार करती थी। वही माँ-बाप बूढ़ा होने पर पता नहीं क्यों बोझ लगते हैं पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि एक दिन सबको बूढ़ा होना है। माँ-बाप भगवान का रूप होते हैं। हमें उनकी सेवा करनी चाहिए और उन्हें भी अपनी छोटी-छोटी खुशियों में शामिल करना चाहिए।

अपने माता-पिता का सर्वदा सम्मान करें।।

श्री हरी बाबू शाक्य,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(ग्वालियर शाखा कार्यालय)

व्यता की गाथा

//श्यामली//

संस्कारों से ओतप्रोत, संघर्ष की मूरत, पति के आलस्य और नक्कारापन, समाज के दिये दंश के बोझ को उठाते हुए बच्चों के लालन-पालन कर रही थी, तभी श्यामली के जीवन में एक सुकून की आहट.....।

बात उन दिनों की है, जब श्यामली की शादी भी नही हुई थी, उसका परिवार आधुनिक शहर के मध्य एक कच्चे एवं टपरेंयुक्त दो कमरों के मकान में माँ-पिता, दो छोटे भाई और एक छोटी बहिन साथ-साथ रहते थे । श्यामली के पिता एक चतुर्थ श्रेणी के बैंक मुलाज़िम थे, घर के सभी सदस्यों का भरण-पोषण व बच्चों को शिक्षा दिलाना बड़ा मुश्किल हो रहा था । घर के खर्चों को व्यवस्थित करने के लिए रामसेवक ने (श्यामली के पिता) एक गाय और एक भैंस को कुछ जमा, पूंजी व उधार लेकर ख़रीदा और दूध निकालकर घर-घर जाकर बेचने का काम शुरू कर दिया ।

चूंकि, पिता को छोटा मुलाज़िम होने के कारण काम पर जल्दी जाना पड़ता था, श्यामली की माँ (रमादेवी) अक्सर बीमार रहती थी, इसलिए गाय-भैंस की देखभाल और दूध निकालने व घर-घर जाकर देकर आने में श्यामली ने स्नातक की पढ़ाई के साथ-साथ पिता के इस काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया । ये वो समय का प्रार्दुभाव था, जहाँ से श्यामली का जीवन-संघर्ष शुरू हुआ, वो जब पिता की तरफ देखती तो उसे स्वयं में जिम्मेदारी का बोध होने लगा । इस बोझ ने कड़कड़ाती ठण्ड और उसके नंगे पैर के एहसास को भी मार डाला ।

समय ने करवट बदली, श्यामली के लिए शादी का रिश्ता आया, पिता को भी चिंता थी कि बेटी स्यानी हो गई है, शादी कर उसके ससुराल विदा कर दी जाये । जैसे ही, श्यामली का रिश्ता आया पिता का मन हर्षित हो गया । मध्याची द्वारा लड़के के बारे में ठीक-ठाक बखान किया गया, लड़के का पिता रेलवे में केंद्रीय सेवारत है, अच्छी तन्खवाह मिलती है, घर सम्पन्न है, बिटिया सुखी रहेगी । श्यामली के पिता ने घर-द्वार देखा और रिश्ते को आगे बढ़ाने का निश्चय कर लिया ।

श्यामली के घर में चर्चा ज़ोरों पर थी, श्यामजी को भी आभास था परंतु संस्कारों से सिंचित और पल्लवित श्यामली अपने मन की प्रबल भावना को भी प्रकट नहीं कर पा रही थी क्योंकि परिवार में लड़की अपनी बात अपनी भाभी से आसानी से कह लेती है परंतु श्यामली इस माध्यम से भी वंचित थी । उसने हिम्मत जुटाकर अपनी माँ से ही लड़के के काम और नौकरी के बारे में पूछ ही लिया, परंतु पिता की पीड़ा एवं माँ द्वारा बेटी विदा का मनबंतर, उसके मन अंतर्गत चल रहे सवालों को एक हवा के झोंके ने विस्मित कर दिया ।

न उफ करती हैं, न सवाल करती हैं, बांध दो पल्लू जिसके साथ,

पीहर छोड़कर चल देती है ।

आखिर क्यों । सवाल ज्वलंत है, परिणाम भी भयावह आ रहे हैं, तो फिर बेटी के मन का बोध परिवार और समाज को कब होगा ।

चूंकि, श्यामली अच्छे संस्कारों से पल्लवित हुई थी, समाज की रूढ़िवादिता के अनुकूल पिता के मुखाग्र भाव को पढ़ आगे बढ़ी और उसकी शादी उसके लिए आए रिश्ते के लड़के (कल्याण) से हो गई । श्यामली को लगा उसका

जीवन कुछ अच्छा होगा, अच्छे परिवार में ब्याह कर आई है, पर उसके मन में सवाल अभी भी थे, जिसके जवाब अभी भी उसके पास नहीं थे, उसने भी सवालों के जवाब आने वाले समय पर छोड़ जीवन में आगे बढ़ने लगी । शादी के शुरूआती दौर के प्रथम दो वर्ष पारिवारिक सुख की अनुभूति हुई । ये अनुभूति कुछ ज्यादा समय टिक न सकी । पति (कल्याण) के न कमाने के कारण सास-ससुर ने अलग गृहस्थी कर दी, ये अलगाव उस समय भीषण संकट लाया क्योंकि वह उस समय गर्भवती थी । जिस जिम्मेदारी से वो अभी-अभी क्षणिक मुक्त हुई थी, उससे भी ज्यादा बोझ उसके अजन्मे बच्चे के बोझ के साथ-साथ कंधों का बोझ भी बढ़ गया । उसने जीवन-यापन के लिए प्राइवेट नौकरी करना शुरू कर दी । यह व्यथा की गाथा श्यामली के जीवन में दो दशक तक यूं ही जीवन के उतार-चढ़ाव के साथ अनवरत चलती रही, इसी दौरान उसके जीवन में दो बच्चों (एक बिटिया और एक बेटा) के लालन-पालन और शिक्षा का भी बोझ बढ़ गया था या यूं कहे तो गलत नहीं होगा कि वो तीन लोगों के लालन-पालन का बोझ उठा रही थी । जीवन भर संघर्ष ही संघर्ष दूरों तक दिख रहा था इसका अंत कहीं भी परिलक्षित नहीं हो रहा था ।

संस्कार और संघर्ष की मूरत, पति के आलस्य और नक्कारापन, समाज के दिए दंश के बोझ को उठाते हुए बच्चों के साथ-साथ पति का भरण-पोषण कर रही थी, वो इस संघर्ष के दौर से थकी सी महसूस करने लगी थी, कुछ बीमारियों ने भी उसके जीवन में दस्तक दे दी थी, तभी श्यामली के जीवन में एक सुकून की बहार की आहट हुई । श्यामली की मुलाकात घनश्याम से हुई । घनश्याम पर वो सीधे तौर पर विश्वास भी नहीं कर पा रही थी, क्योंकि दो दशक में इस पुरूष प्रधान समाज ने उसके मन को झकझोर के रख दिया था । दोनों की सामान्य मुलाकात समय और विश्वास की परत के साथ एक अच्छी दोस्ती के रूप में परवान चढ़ने लगी ।

चूंकि, घनश्याम एक अच्छे परिवार से था, उसने दोस्ती का पूरा हक अदा किया, श्यामली के जीवन के अथक कष्टों को थोड़ा कम करने का सार्थक प्रयास किया ।

अब श्यामली का जीवन सुगम तो हुआ परंतु उसके जीवन में जो अथाह वेदना रही, जो दंश उसने झेला, जो गलती उसने की ही नहीं उसका दंड उसने सहज ही क्यों भोगा । ये बात घनश्याम अच्छी तरह समझ चुका था, उसका प्रयास श्यामली के जीवन को कुछ सुख देना तथा बच्चों के जीवन मार्ग को प्रशस्त करना था, जिसे वो अदृश्यता के साथ निभाने का कार्य किए जा रहा था । श्यामली उसके इस निःस्वार्थ एवं निश्चल स्वभाव के कार्य से अथक प्रभावित होकर जीवन को समाज की बंदिशों के तहत अब सुखमय व्यतीत करने का प्रयत्न कर रही थी ।

ये व्यथा की गाथा एक श्यामली की नहीं है, हमारे समाज में अनेकों श्यामली बेटी होने का प्रश्न है हमारे लिए एवं पुरूष प्रधान इस समाज के लिए ।

अंत शब्दों में-

चल उठ तू कमज़ोर नहीं, तुझे ही अब कुछ करना है ।
ये कलयुग है, अब कोई राम नहीं आने वाला,
तुझको ही सब कुछ करना है ।।

श्री राकेश गोयल,

स.ले.प.अ.

ईमानदारी का फल

एक बार की बात है, एक छोटे से गाँव में एक सेठ रहता था। वह अकेला ही था, उसके आगे पीछे कोई नहीं था। उस सेठ का काम बहुत बढ़िया चल रहा था। धीरे-धीरे उसके पास बहुत धन इकठ्ठा हो गया था। सेठ ने चोरी के डर से उस धन से सोना खरीद लिया और उसे छुपाकर अपने घर में रख दिया। इस बात का पता रात में पहरा देने वाले पहरेदार को चल गया। पहरेदार को उसी दिन से उस सोने को हथियाने की लालसा उत्पन्न हो गई। पहरेदार एक रात को सेठ के घर में घुस गया और उसे मार दिया तथा उसका सारा सोना हथिया लिया। वह सेठ के घर से भाग ही रहा था कि उसे एक पड़ोसी ने देख लिया। पड़ोसी का नाम घनश्याम दास था। वह बहुत ही ईमानदार इंसान था। घनश्याम ने पहरेदार से पूछा, "तुम यह पोटली लेकर कहाँ भागे जा रहे हो और इस समय सेठ के घर में क्या करने गए थे?" पहरेदार बोला- दूर हटो! और वह भागने लगा, तो ठोकर खाकर गिर गया। उसकी पोटली खुल गई और सोना नजर आने लगा। घनश्याम बोला, इसका मतलब तुमने सेठ के घर से सोना चुराया है। पहरेदार बोला- आवाज़ मत करो, देखो! हम दोनों इसे आपस में बाँट लेंगे। किसी से कुछ मत कहना। घनश्याम बोला, मैं गलत काम नहीं कर सकता, मैं मेहनत की खाता हूँ। पहरेदार ने उसे धमकी दी- मेरी बात मान जाओ, नहीं तो तुम फंस जाओगे। घनश्याम ने उसकी एक न सुनी। पहरेदार ने मन ही मन कुछ सोचा और घनश्याम को पकड़कर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। आवाज़ सुनकर वहाँ लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। लोगों ने पहरेदार से पूछा, तुमने इस आदमी को क्यों पकड़ रखा है? पहरेदार ने बताया, यह आदमी सेठ के घर से सोना चोरी करके भाग रहा था, मैंने इसे पकड़ लिया है। घनश्याम बोलता रहा.. मैं कसूरवार नहीं हूँ। पर उसकी किसी ने ना सुनी। जब लोगों ने सेठ के घर में जाकर देखा तो सेठ मरा पड़ा था। तुरंत पुलिस को बुलाया गया और पुलिस उस निर्दोष व्यक्ति को सेठ के कत्ल और चोरी के जुर्म में पकड़ कर ले गई। मामला जब न्यायालय पहुंचा तो उस आदमी ने जज साहब के सामने बहुत मिन्नत की, कि वह निर्दोष है और असली गुनहगार तो पहरेदार है। लेकिन सारे सबूत उसके खिलाफ थे। अंत में घनश्याम को फाँसी की सजा सुनाई गई। यह सुनकर घनश्याम न्यायालय में चीख पड़ा कि तुम्हारे दरबार में कोई न्याय नहीं है, यहाँ पर बेगुनाह को सज़ा दी जाती है। भगवान तुम्हें इसकी सज़ा देगा। जज को घनश्याम के शब्द शूल की भाँति चुभने लगे। जज ने सोचा कहीं मैंने गलत फैसला तो नहीं सुना दिया और एक निर्दोष व्यक्ति को सज़ा दे दी। जज ने एक योजना बनाई। उसने उसी रात पहरेदार और घनश्याम को एक साथ बुलाया और कहा कि उस कोने वाले घर में एक आदमी मर गया है। उसकी लाश को चारपाई पर रखकर यहाँ लेकर आओ। पहरेदार और घनश्याम लाश को चारपाई पर रख कर ला रहे थे, तो रास्ते में पहरेदार बोला देखो अगर तुमने उस दिन मेरी बात मान ली होती तो तुम्हें झूठे केस में फाँसी की सज़ा भी ना मिलती और सोना अलग से मिलता। कत्ल मैंने किया और पकड़े गए तुम, अब भुगतो! ईमानदारी की सज़ा । जब वे लाश लेकर जज के सामने पहुँचे तो लाश अचानक से खड़ी हो गई और उसने सारी बात जज साहब को बता दी । असल में लाश के भेष में पुलिस वाला था, जिसे जज ने अपनी योजना में शामिल किया था। अब फैसला फिर से सुनाया गया और फाँसी की सजा पहरेदार को मिली और घनश्याम की ईमानदारी के लिए उसे इनाम भी दिया गया। इस प्रकार अच्छे कर्मों का फल इंसान को अवश्य मिलता है । ईमानदारी की वजह से जीवन में कुछ कठिनाइयाँ आ सकती है पर अंत में उसका पुरस्कार अवश्य मिलता है ।

श्रीमती शालिनी दहिया,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

भेदभाव-परिप्रेक्ष्य व असमानता के बहुरूप

1."सुपीरियरिटी कॉम्प्लेक्स"/श्रेष्ठता मनोग्रंथि एक शब्द है जिसे अल्फ्रेड एडलर नामक आस्ट्रेलियन मनोचिकित्सक ने 1900 के दशक की शुरुआत में व्यक्तिगत मनोविज्ञान के अपने स्कूल के हिस्से के रूप में गढ़ा था । इस मनोदशा के व्यक्ति का मानना होता है कि वे दूसरों की तुलना में असाधारण रूप से बेहतर हैं। उनमें अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान की भावना होती है और वे मानते हैं कि वे जो कुछ भी करते हैं, कहते हैं या मानते हैं, वह सही है ।
2. एक स्थितिजन्य "Narcissist"/आत्मपूजक/आत्ममुग्ध व्यक्ति स्वयं से अधिक बुद्धिमान, श्रेष्ठ और ज्ञानी किसी को भी नहीं समझते ।
3. "गॉड कॉम्प्लेक्स"/ईश्वर मनोग्रंथि वाले लोग सोचते हैं कि उनके पास दैवीय, ईश्वरीय शक्तियां हैं और वे मानव जाति से ऊपर हैं ।

इन सभी पारिभाषिक शब्दों की चर्चा केवल यह दर्शाने के लिए की गई है कि मानव मन अत्यंत जटिल है । ये श्रेष्ठता/आत्ममुग्धता/ईश्वरीय सोच मनुष्य में यकायक नहीं आती अपितु वर्षों तक सींची जाती है । इस देश में क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति, नस्ल, लिंग, वर्ण, शिक्षा, पृष्ठभूमि, आदि के आधार पर लोग बंटे हुए हैं । आपसी भेदभाव के इतने पैमाने हैं कि सोशल मिडिया या किसी भी अन्य मंच पर सौहार्दपूर्ण बातचीत में धर्म-रक्षक, जाति-रक्षक, पशु-रक्षक, भाषाई-रक्षक, लिंग-पक्षपाती ऐसे एकदम से निकल कर आ जाते हैं, जैसे वर्षा ऋतु के बाद कुकुरमुत्ते बिन बुलाए बाराती की भांति निकल आ धमकते हैं ।

देश में विभाजन उपरांत, अलग-अलग धर्म, जाति, भाषा के लोग एक समग्र भारतवर्ष की आस में एक साथ अंग्रेज़ी शासन का सिंहासन हटाकर इसलिए नहीं एकत्र हुए थे कि 21वीं सदी में जहां प्रतियोगी विकसित देश के नागरिक वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी उच्चता, चिकित्सा जगत में विकास की योजनाएं बना रहे होंगे, वहीं एक दिन भारतवंशी आपस में ही लड़-मरने और वैमनस्य की भावना पल्लवित करने के लिए औज़ारों को पैना कर रहे होंगें । सन् 70-80 के दशक में भी लोग आपसी बैर-भाव से इतर घर-परिवार तथा आर्थिक तरक्की की ओर अधिक केंद्रित थे । वहीं 90 के दशक में जहां आर्थिक उदारीकरण में अपेक्षा तो ये थी कि नागरिक देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने में सहयोग देंगें किंतु कुछ निम्न सोच के समूह मंदिर-मस्ज़िद, उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-गैरहिन्दी, पुरूष-स्त्री के भेदभाव को उभारने के उद्येश्य से समाज में नफरत के बीज बो रहे थे ।

वर्तमान में, जहां 21वी सदी का युवा, गूगल के सी.ई.ओ. सुंदर पिचाई, माइक्रोसॉफ्ट के प्रमुख सत्य नडेला, पेप्सिको की सी.ई.ओ. इंदिरा नुई, केन्टोर फिजगेरॉल्ड के वर्तमान अध्यक्ष व ड्यूश बैंक के पूर्व सी.ई.ओ. अंशु जैन, अडोबी सिस्टमस के सी.ई.ओ. व अडोबी फाउंडेशन बोर्ड के अध्यक्ष शांतनु नारायण, डिएगो के सी.ई.ओ. इवान मेनेज़ेस, ग्लोबल फाउंडरिस के सी.ई.ओ. संजय झा, मास्टरकार्ड के अध्यक्ष व सी.ई.ओ. अजयपाल सिंह बांगा, हरमन

अंतराष्ट्रीय इंडस्ट्रीज़ के सी.ई.ओ. दिनेश सी. पालीवाल, नोकिया के के अध्यक्ष व सी.ई.ओ. राजीव सूरी, ड्यूश बैंक के सह-सी.ई.ओ. अजीत जैन, नोवार्टिस के सी.ई.ओ. वसंत नरसिंहा, एन.आई.ओ. यू.एस. की सी.ई.ओ. येलिपेड्डी पद्मश्री वारियर विश्व पटल पर भारत की नई उन्नत पहचान अंकित करने में लगे हुए हैं, वहीं देश के भटके हुए आम युवा संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त हैं । चारों ओर ऐसे समूह, संगठन पनप रहे हैं, जो देश में एकता नहीं अनेकता में बंटे लोगों का अनुचित फायदा उठाकर अपने नीच उद्येश्यों को सफल बनाना चाहते हैं ।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई.सी.एस.एस.आर.) द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों के खिलाफ नस्लीय भेदभाव और घृणा अपराधों पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि "पूर्वोत्तर भारत एक चीनी व्यक्ति की भारतीय कल्पना में मूल रूप से फिट बैठता है ।" अप्रैल, 2021 में अमेरिकी आयोग, अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता ने 2004 के बाद पहली बार भारत को "विशेष चिंता के देश" के रूप में सूचीबद्ध किया है । 4 अगस्त, 2021 को टोकयो ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम के सेमीफाइनल मैच हारने के कुछ घंटे बाद, पुरुषों का एक समूह कथित तौर पर हरिद्वार में महिला हॉकी खिलाड़ी के घर के बाहर इकट्ठा होकर पटाखे फोड़ने, जश्न में नाचने, जातिवादी गालियां देने लगा और कथित तौर पर कहा कि भारत की हार का कारण टीम में "बहुत सारे दलित खिलाड़ी" व "हर खेल में दलितों को बाहर रखना चाहिए" । तमिलनाडु के त्रिची जिले के कालकंदर कोट्टई गांव में दलित कॉलोनियों को खेतों से अलग करने वाली 9 फुट की दीवार खड़ी कर दी गई है । वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट, 2021 में 156 देशों में भारत 28 स्थान से नीचे गिरकर 140वें स्थान पर आ गया है । लिंक्डइन ऑपर्च्युनिटी इंडेक्स, 2021 से पता चला है कि 10 में से 9 या यूं कहे कि 89 प्रतिशत महिलाओं पर कोरोनावायरस महामारी का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है । यह एशिया प्रशांत के क्षेत्रीय औसत 60 प्रतिशत से काफी अधिक है । भारतीय समाज का मानना है कि त्वचा का रंग किसी व्यक्ति की कीमत निर्धारित करता है, यहां सभी गुण "निष्पक्ष" यानि सफेद रंग से जुड़े हैं, जबकि कुछ भी अंधेरा "नकारात्मक" अर्थ रखता है । टीवी कार्यक्रम, फिल्में, होर्डिंग, विज्ञापन, ये सभी इस विचार को पुष्ट करते हैं कि "गोरा ही सुंदर है"। भारतीय विज्ञापन मानक परिषद ने 2014 में उन विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाकर त्वचा-आधारित भेदभाव को दूर करने का प्रयास किया, जो गहरे रंग की त्वचा वाले लोगों को निम्न स्तरीय रूप में दर्शाते हैं । दिल्ली के एक निजी स्कूल ने हाल ही में आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग (ई.डब्ल्यू.एस.) से संबंधित एक बच्चे को प्रवेश देने से इनकार कर दिया, जिसे दिल्ली सरकार द्वारा बच्चों के नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (आर.टी.ई. अधिनियम) के तहत स्कूल दाखिला आवंटित किया गया था । ई.डब्ल्यू.एस. से संबंधित छात्रों के लिए 25% आरक्षण अनिवार्य करने वाले आर.टी.ई. अधिनियम के बावजूद, स्कूल ने दावा किया कि उसके पास पहली कक्षा में कोई खाली सीट नहीं है और वह केवल प्री-स्कूल कक्षाओं में प्रवेश दे सकता है । उस बच्चे ने दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया । अदालत ने प्रथम दृष्टया बच्चे के पक्ष में मामला पाया और आदेश दिया कि मामले का फैसला होने तक बच्चे के लिए एक सीट खाली रखी जाए । बाद में, स्कूल ने खुलासा किया कि वास्तव में एक खाली सीट थी और बच्चे को प्रवेश देने का बीड़ा उठाया । इसके बाद अदालत ने आर.टी.ई. अधिनियम के तहत बच्चे को पहली कक्षा में दाखिल करने का निर्देश दिया । ऑक्सफैम इंडिया की रिपोर्ट 'इंडिया इनइक्वलिटी रिपोर्ट 2021: इंडियाज़ अनइक्वल हेल्थकेयर स्टोरी' में कहा गया है कि जब स्वास्थ्य देखभाल और स्वास्थ्य संकेतकों की बात आती है तो "शहरी आबादी ग्रामीण आबादी से बेहतर होती है"। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय स्वास्थ्य सेवा में लगातार कम फंडिंग एक बड़ी समस्या रही है । “ग्रामीण इलाकों में देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या है, जबकि इसके पास देश के केवल 40 प्रतिशत अस्पताल बेड हैं ।"

इस तरह के परिप्रेक्ष्य में समानता का राग झूठा ही लगता है । संविधान की प्रस्तावना में जो भारी भरकम मियादें, यथा "समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य; समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय; विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म व उपासना की स्वतंत्रता; प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता तथा अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए" का वास्तविक अनुपालन प्रत्येक भारतीय का उत्तरदायित्व है । प्रत्येक सामाजिक व गैर-सामजिक समूह, सरकारी तंत्र, नौकरशाह, राजनीतिक दल का भी यह उत्तरदायित्व है कि वे राष्ट्र की संप्रभुता, एकता, पंथनिरपेक्ष छवि की रक्षा हेतु अपने दायित्व तथा जवाबदेही तय करें । अन्यथा, वह दिन दूर नहीं, जब बाहरी ताकतें देश की आंतरिक कमज़ोरी का अनैतिक फायदा उठाएंगी ।

{स्त्रोतः साभार,

फ्रीमलेशियाटुडे.कॉम; न्यूज़इंडियनएक्सप्रेस.कॉम; वाइडएंगलऑफलाइफ.कॉम; लाइफस्टाइल.लाइवमिंट.कॉम; पेवफॉरम.कॉम; यूएसआईपी.ओआरजी; एनबीसीन्यूज़.कॉम; हिंदूस्तानटाईमस.कॉम; दडिप्लोमेट.कॉम; ऑनलाइन.यूसीप्रैस.ईडीयू; इंडियाटाईमस.कॉम; सीएलपीआर.ओआरजी.इन; इकोनोमिस्ट.कॉम; ईपीडब्लयू.आईएन; दहिंदू.कॉम; ओरफोनलाइन.ओआरजी; इंडियाटुडे.आईएन; इकोनोमिक्स.इंडियाटाईमस.कॉम; दवीक.आईएन; इंडियाएजुकेशनडायरी.आईएन; न्यूज़पेट्रोलिंग.कॉम; दहिंदूसेंटर.कॉम; हिमालमाग.कॉम; आउटलुकइंडिया.कॉम; ओक्सफोर्डआरई.कॉम; अलज़ज़ीरा.कॉम; लाइवमिंट.कॉम; डेक्कनहेरॉलड.कॉम; बिज़नेसटुडे.आईएन; फर्स्टपोस्ट.कॉम; एनवाईटाईमस.कॉम; बीबीसी.कॉम; बोर्गनप्रोजेक्ट.कॉम; शीदपीपुल.टीवी; डीयुटर.कॉम; जर्नल्स.सेजपब.कॉम; दकन्वर्सेशन.कॉम; इंडियाएक्सप्रेस.कॉम; बिज़नेसलाइव.को.ज़ेडए; बीएमसीपब्लिकहेल्थ.बायोमेडसेंट्रल.कॉम; रूरलहेल्थइंफो.ओआरजी; नेचर.कॉम; आईआईएमसीएएल.एसी.आईएन; सीओई.आईएनटी; यूएन.ओआरजी}

मास्टर अभिषेक कुमार आर्य,
सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.

सन् 3000

यह उनतीसवीं सदी की बात है, जहाँ दुनिया विज्ञान के क्षेत्र में बहुत आगे निकल चुकी थी । मनुष्य जाति अपने आपको और इस दुनिया को समझने की शक्ति विज्ञान के सहारे बढ़ाती जा रही थी । ट्रांसफोर्मेबल (Transformable) कार की सातवीं पीढ़ी की अदृश्य ताकत पर ज़ोर-शोर से काम चल रहा था । मनुष्य की ज़िंदगी आसान और आरामदायक बन जाने पर मनुष्य आलसी और लोभी बनते जा रहे थे । हर चीज़ में वह अपना स्वार्थ खोज रहे थे । जहाँ मनुष्य का जीवनकाल 100 वर्ष का होता था, वहीं आज आधुनिक उपकरणों के कारण 100 वर्ष और बढ़ गया । दुनिया की आबादी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी । कृत्रिम (Artificial) खाने की होड़ थी ।

न्यूयार्क में न्यूकलियर वैज्ञानिक रोबर्ट मिलान और उनकी पूरी टीम उनके साथ काम कर रही थी, एक ऐसे आविष्कार पर जो लोगों के भूतकाल को सुधार सकता था । एक 'समय यंत्र' जिसकी हम आज तक कल्पना भी नहीं कर सकते थे, उसे बनाने की कोशिश की जा रही थी । इसके लिए एक न्यूक्लियर स्थल पर बहुत स्तर पर रिसर्च की जा रही थी । एक दिन अचानक एक रिएक्टर ओवरलोड हो गया । 'इमरजेंसी अलॉर्म' को सुनकर सभी लोग आपातकालिक निकास से भागने लगे । उस रिएक्टर में मौजूद एक कर्मचारी ने रिएक्टर को बंद करने की कोशिश भी की, परंतु इससे पहले कि वह रिएक्टर को बंद करता, वह ब्लास्ट हो गया और बहुत सारा रेडिएशन फैल चुका था । इस धमाके को सुनकर सारा शहर पास वाले पुल के ऊपर एकत्रित होकर यह दृश्य देख रहा था । उन्हें क्या पता था कि यह विस्फोटक व भयानक दृश्य उनके जीवन का आखिरी दृश्य होगा । सभी लोग धीरे-धीरे रेडिएशन की वजह से ज़मीन पर गिरकर मरने लगे । यह रेडिएशन इतना गंभीर था कि पड़ोसी देशों की सरहदों को भी पार कर गया । सभी देशों ने इसकी निंदा की तो अमरिकी अदालत ने न्यूकलियर पॉवर के इस्तेमाल पर रोक लगा दी ।

रोबर्ट मिलान इन चुनौतियों से न डरकर एक छोटी सी लैब में काम करने लगे । सालों की मेहनत के बाद उन्हें सफलता मिली । एक 'समय यंत्र' बनकर तैयार था । परंतु अभी तक इसका इस्तेमाल नहीं किया गया । एक दिन वह इसका प्रयोग करने के लिए सभी वैज्ञानिकों की उपस्थिति में उस मशीन पर सवार हुए । आगे क्या होने वाला है यह जानने के लिए वैज्ञानिक बहुत उत्सुक थे । मशीन चालू हुई । मिलान ने अपनी आंखें बंद कर अपने परिवार को याद किया । मशीन तेज़ी से घूमने लगी और अचानक अदृश्य हो गई । सब हैरान और चित्त हो गए, पर मिलान के सहयोगी वैज्ञानिक ने सबको खबर दी कि वह समयकाल को चीरते हुए पीछे के समय में जा रहे हैं । सभी लोग तालियाँ बजाने लगे । उनके सहयोगी को यह बात पसंद न आई क्योंकि सब लोग बस मिलान के चर्चे कर रहे थे । इस समय पर सहयोगी वैज्ञानिक ने मिलान के आने वाले वाले पोर्टल को बंद कर दिया और तकनीकी ख़राबी बताई । इस पर कई वैज्ञानिक मदद के लिए आगे आए । सहयोगी वैज्ञानिक ने उन्हें चेताया कि एक गलती उन्हें हानि पहुंचा सकती है । उसने धीरे-धीरे सबको विदा किया । पर उनके एक मित्र की न जाने की ज़िद की वज़ह से उसने क्रोध में उसे मारने के बारे में सोचा, पर उससे पहले मिलान के मित्र ने लेज़र गन से सहयोगी वैज्ञानिक को धराशायी कर दिया । मिलान के मित्र ने बहुत कोशिश की और उसे जिंदा ले आया ।

मिलान ने अपने मित्र का शुक्रिया अदा किया । मिलान ने अपना अनुभव बताया पर उसने अपने मित्र से कहा कि हमें यह मशीन जल्द से जल्द तोड़नी चाहिए । मिलान की यह बात सुनकर वह आश्चर्यचकित हो गया पर

मिलान ने कहा कि आश्चर्यचकित होने की बात नहीं है । मैंने भविष्य में जाकर इस मशीन के पीछे बहुत सारी बुरी ताकतों को देखा है । इसलिए कहता हूँ इसे तोड़ दो । इससे पहले वो कुछ कर पाते उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया । उन पर एक आदमी को मारने और बिना सरकार की अनुमति के न्यूकलियर शक्ति का प्रयोग करने का आरोप लगाया गया । उसके 'समय यंत्र' को सरकारी वैज्ञानिकों ने इस्तेमाल में लाने के लिए पूरे यंत्र पर निगाह डाली और प्रयोग के लिए रिसर्च में लग गए । परंतु जैसा मिलान ने भविष्य में देखा था, अगले ही दिन वहां से 'समय यंत्र' चोरी हो गया । जगह-जगह अजीब ढंग से चोरियाँ होने लगी ।

इसका सीधा संबंध 'समय यंत्र' की चोरी से है । मिलान और उसके साथी को तुरंत रिहा किया गया और उनसे 'समय यंत्र' को बेकार करने के बारे में पूछा गया । मिलान ने कहा कि मशीन के मेन पैनल को तबाह करना होगा । एक सैन्य टुकड़ी बनाई गई जो मिलान और उनके साथी को 'समय यंत्र' के पास पहुंचाएगी और फिर मिलान और उनके साथी 'समय यंत्र' को निष्क्रिय करके पीछे बैकअप टुकड़ी के साथ भाग जाएंगें । सुनने में यह आसान लग रहा था परंतु चोरों के पास बहुत हथियार होंगें इसलिए मिलान और उनके मित्र को एक-एक लेज़र गन दे दी गई । सब कुछ जैसा सोचा था वैसा ही हो रहा था । यह मशीन तीसरी मंज़िल पर थी । रात के तीन बज रहे थे । पूरी फोर्स ने अपना काम शुरू कर दिया । पहली और दूसरी मंज़िल के कार्य को बड़ी सफाई से पूरा किया गया । सभी चोरों को चुपके-चुपके मार दिया गया । तीसरी मंज़िल पर पहुंचते ही मिलान और उनके मित्र समय-यंत्र को नेस्तनाबूद करने में लग गए परंतु उसकी सिक्रेट फाइल के बिना उसे बंद न कर सके । उनके पास अब इसे तोड़ने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था । मिलान ने उसे अपने देश के भविष्य के लिए तोड़ डाला । सभी सुरक्षित वापिस आएं । इसके बाद उसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । जब मिलान को एक बार जनता के बीच बोलने का मौका मिला, तो वह बोला *"हमें जो बीत चुका उसे बदलने की जगह, अपने कर्म से अपना भविष्य बदलना चाहिए ।"* सब ओर से तालियों की आवाज थी । उसकी ज़िंदग़ी का यह सबसे यादगार पल था जो उसने अपने मित्र के साथ बिताया ।

श्रीमती गिन्नी अरोड़ा
स.ले.प.अ. (आर.ए.आई.टी. अनुभाग)

दैनिक रियलिटी - ओटीटी

ओटीटी प्लेटफॉर्म अब एक ऐसी सच्चाई है, जो हमारे मोबाइल से लेकर घरों तक में प्रवेश कर चुका है । कोविड-19 से बचाव के लिए हुए लॉकडाउन और अनलॉक के जबरन अवकाश के दिनों में 21वीं सदी के दर्शकों ने मनोरंजन के लिए इसका सहारा लिया । धीरे-धीरे उन्हें इसकी आदत हो गई । ओटीटी प्लेटफॉर्म पिछले कुछ सालों में भारतीय परिदृश्य में जगह और पहुँच बनाने के लिए प्रयासरत थे । प्रगति की रफ्तार बहुत धीमी थी । भारतीय विषयों और किरदारों को लेकर ओटीटी पर ओरिजिनल शो आने शुरू हुए तो जिज्ञासा बढ़ी तो उसी अनुपात में दर्शक बढ़े । कोशिश रही कि भारतीय बाजार में पैठ बनाने के लिए भारतीय भाषाओं में कंटेट परोसा जाए । ओटीटी प्लेटफॉर्म ने फिल्मों के प्रसारण के अधिकार भी लेने शुरू कर दिए । अब निर्माताओं को सेटेलाइट अधिकार से ज्यादा फिक्र ऑनलाइन स्ट्रीमिंग यानि ओटीटी प्लेटफॉर्म की रहती है ।

छोटी और सीमित बजट की फिल्में ओटीटी पर पहले भी आ रही थी परंतु लॉकडाउन के समय यह अनिश्चितता बढ़ने लगी कि सिनेमाघर कब खुल सकेंगें । ऐसे में फिल्म निर्माताओं ने अपनी तैयार फिल्मों को ओटीटी पर लाने का फैसला किया । ओटीटी पर फिल्म के हिट या फ्लॉप का पैमाना नहीं है । निर्माता और ओटीटी के अधिकारी मिल-बैठकर कीमत तय कर लेते हैं । सबसे पहले शुजीत सरकार ने अपनी फिल्म गुलाबो-सिताबो को ओटीटी पर लाने की घोषण की ।

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर फिल्मों के प्रसारण का सिलसिला आरंभ होने से पहले ही वेब सीरीज़ आरंभ हो गई थी । टीवी से अलग, इसमें कहानियों के साथ प्रयोग हो रहा है और कंटेट भी नया है । साथ ही लंबे कमर्शियल ब्रेक भी नहीं है । आठ से दस एपिसोड की जिसमें प्रति एपिसोड 25-40 मिनट का होता है । लोकप्रिय होने के बाद दर्शकों को बाँधे रखने के लिए उनके दूसरे-तीसरे सीजन की तैयारी होने लगती है ।

वेब सीरीज पर किसी भी प्रकार के सेंसर का समर्थन नहीं किया जा सकता । हाँ, जिस संयम और आत्मनिरीक्षण के साथ सेल्फ सेंसरशिप की जरूरत है, उस पर विचार-विमर्श होना चाहिए । दर्शकों की शिकायत की सुनवाई की व्यवस्था होनी चाहिए ।

श्री हरीश चंद्र पाण्डेय,
वरि. लेखापरीक्षक

स्वास्थ्य लाभ

आज मैं अपने विचार अच्छे स्वास्थ्य के प्रति प्रकट कर रहा हूँ क्योंकि आज हमारा जीवन इस वर्तमान व्यवस्था में इस प्रकार से उलझ गया है कि हम अपने लिए समय नहीं दे पाते हैं । हम शहरी जीवन में इस प्रकार से ढल गए हैं कि हम भूल ही गए हैं कि हम एक स्वस्थ जीवन कैसे जिएं । आज सभी एक अंधी दौड़ में लगे हैं और मालूम ही नहीं है कि हमारी मंज़िल क्या है । हर व्यक्ति कुछ न कुछ पाने की लालसा (भौतिक सुख) से घिरा हुआ है। हमारा अपनी इच्छाओं पर बिल्कुल नियंत्रण नहीं रह गया है । इन सभी कारणों से हम अपना स्वास्थ्य बिगाड़ते जा रहे हैं ।

आज यदि हमें अपना शरीर स्वस्थ एवं जीवन सरल बनाना हैं तो हमें अपनी दिनचर्या में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने होंगे, कुछ नियमों का पालन करना होगा, अपने खान-पान का ध्यान, योग-अभ्यास, प्राणायाम, व्यायाम, ध्यान एवं खेलों को अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा । प्रात: एवं सायं की सैर भी हमारे शरीर के लिए लाभप्रद होगी । अंग्रेज़ी दवाओं का उपभोग कम कर हमें भारतीय आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लेना होगा ।

आज हम अपने खान-पान के प्रति बहुत लापरवाह हो गए हैं । शहरी जीवन में तो फास्ट-फूड ने अपना प्रभाव बहुत अधिक फैला लिया है । जिसके कारण आज कई नई बीमारियों का जन्म हो गया है । बच्चे भी इससे अछूते नहीं है । जिन्हें फास्ट-फूड की आदत हो गई, उन्हें घर का भोजन स्वादिष्ट नहीं लगता । कहा भी गया है कि ***'जिह्वा को जो स्वाद अधिक अच्छा लगता है, वही हमारे शरीर हेतु हानिकारक है ।'***

भोजन सुपाच्य एवं शाकाहारी होगा तो हमारा शरीर एवं मन दोनों स्वस्थ होंगे । हमारी पाचन-क्रिया अच्छी होगी । भोजन खाते समय पानी का उपयोग वर्जित है। सलाद भी खाने के बीच में ना लिया जाएं । पका एवं कच्चा पदार्थ एक साथ खाने से हमारी पाचन-क्रिया बाधित होती है । हमें अपने क्रिया-कलापों के अनुसार भोजन की मात्रा को निर्धारित करना होगा। सलाद खाने से आधे-से-एक घंटा पूर्व खाना चाहिए, उसमें नमक का प्रयोग न किया जाएं। पानी भी इसी तरह खाने के आधा घंटा पहले या बाद में ही पीना फायदेमंद होगा। यदि पानी पीना, खाने के साथ आवश्यक हो तो उसे गर्म करके पीना चाहिए । जिनकी पाचन क्रिया सही कार्य न कर रही हो, उन्हें उपवास भी नियमानुसार रखने होंगे । उपवास कई प्रकार के है जिनके विषय में विस्तार से चर्चा अगले अंक में करना चाहूँगा ।

आज भौतिक सुखों, गलत खान-पान, बेफिज़ूल की चिंताओं एवं आराम-परस्ती के कारण हमने अपने शरीर में विजातीय द्रव्यों (Toxic) को जमा कर लिया है और यही हमारी बीमारियों का मुख्य कारण है । शरीर से विजातीय द्रव्यों को उत्सर्जित करना होगा । जिसके लिए हमें पानी पीने की मात्रा बढ़ानी होगी, खाने में पेय-पदार्थ, ताजे फलों का रस, शारीरिक क्रिया-कलाप, योग अभ्यास, अनीमा (प्राकृतिक चिकित्सा), उपवास रखना इसकी एक महत्वपूर्ण चिकित्सा है ।

यदि हमारा शरीर स्वस्थ हो तो हमारा मन तनाव-मुक्त एवं शांत होगा, तो हम एकाग्र होकर कार्य कर सकेंगे जिससे हमारे सभी कार्य पूर्ण एवं सफल होंगे, मन में अच्छे-अच्छे विचार उत्पन्न होंगे, हमारे चेहरे पर प्रसन्नता एवं तेज होगा, हमारे व्यवहार में परिवर्तन आएगा, अपने परिवार एवं अन्य सभी के साथ जीवन-जीने की आनंदित अनुभूति होगी जिससे हमारा परिवार, समाज, देश एवं विश्व का कल्याण होगा । इसी के साथ मैं अपनी कलम को विराम देता हूँ ।

धन्यवाद!!

श्रीमती शालिनी दहिया,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

बाल शोषण-*कानून, आंकड़ें व कुछ निर्णय*

कहा जाता है कि बच्चे भगवान के रूप हैं । एक नास्तिक भी बाल-क्रीड़ा देखकर भक्तिमय मोहपाश में फंस जाता है । जहां प्रत्येक धर्म, संप्रदाय, देश, नस्ल के बुद्धिजीवी बाल हितों की रक्षा व उनके विकास को मानव जाति का सर्वोच्च कर्त्तव्य मानते हैं, वहीं कुछ ऐसे भी हैं, जो इन बच्चों का बचपन छीनकर उन्हें बाल्यकाल में ही इस दुनिया की गंदगी से रूबरू करवा देते हैं ।

दो दशक भर पहले उत्तर भारत में 'बेबी किलर' नामक अपराधी अलग-अलग राज्यों में बच्चों का पहले अपहरण और फिर निर्मम हत्या कर सनसनी फैलाने का अपराध अंजाम दे रहे थे । इसके कुछ सालों बाद बच्चों का अपहरण और फिरौती या फिरौती ना मिलने पर निर्मम हत्या का कुकर्म किया जाने लगा । उन्होंने हमारे कमज़ोर कानूनों और धीमी/अशक्त कानूनी प्रक्रिया का मज़ाक उड़ाया ।

कानूनी प्रावधानः भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15(3) के अंतर्गत, "राज्य को बच्चों के लिए विशेष प्रावधान करने चाहिए ।" संविधान के भाग IV के अनुच्छेद 39 के अंतर्गत, "राज्य (अन्य बातों के अतिरिक्त) यह सुनिश्चित करने की दिशा में कि बच्चों के साथ दुर्व्यवहार न हो; आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर ऐसे व्यवसायों में प्रवेश नहीं करे, जो उनकी आयु या शक्ति के प्रतिकूल हों; उन्हें नैतिक और भौतिक परित्याग से सुरक्षा, स्वस्थ तरीके और स्वतंत्रता और सम्मान की स्थिति में विकसित होने के अवसर दिए जाने के लिए अपनी नीतियां निर्देशित करें ।" किशोर न्याय अधिनियम, 2015 'डोली इनकैपैक्स' के सिद्धांत पर आधारित है, जो भारतीय दंड संहिता की धारा 82 और 83 में उल्लेख किया गया है, जिसके अंतर्गत यह माना जाता है कि 7 वर्ष से कम उम्र के बच्चे में "अपने कार्य की प्रकृति और परिणाम को समझने की क्षमता का अभाव है" और इस प्रकार आवश्यक आपराधिक मनःस्थिति/Mens Rea का अभाव है । इस अधिनियम के तहत 18 वर्ष से कम उम्र के किसी भी व्यक्ति को एक बच्चा माना जाता था और उसे कभी भी वयस्क के रूप में पेश करने की अनुमति नहीं दी जाती थी । यह वह प्रावधान था जिसने 16 दिसंबर, 2012 को हुए निर्भया मामले के बाद भारत में कोहराम मचा दिया और पूरे देश को झकझोर कर रख दिया । इसने किशोर न्याय के दायरे में कानून की प्रयोज्यता पर भी सवाल उठाया क्योंकि एक आरोपी की उम्र 18 साल से 6 महीने कम थी । अतः, इस तरह के जघन्य अपराध में 18 वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति की भागीदारी ने भारतीय विधान को एक नया कानून पेश करने के लिए मजबूर किया और इस प्रकार, संसद एक नया कानून लेकर आई जिसे "किशोर न्याय (देखभाल और संरक्षण)" अधिनियम, 2015 कहा जाता है । इस अधिनियम ने मौजूदा किशोर कानूनों को बदल दिया और कुछ उल्लेखनीय बदलाव पेश किए । उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक यह भी था कि 16 से 18 वर्ष की आयु के किशोरों पर जघन्य अपराध करने के आरोप में वयस्कों की भांति मुकदमा चलाया जाना था । इस ऐतिहासिक परिवर्तन के साथ, विधानमंडल द्वारा किया गया एक और परिवर्तन आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013 था, जो निर्भया मामले में देशभर की लड़ाई का प्रत्यक्ष परिणाम था । आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013

में भारतीय दंड संहिता की धारा 376 (2) (i), भारतीय दंड संहिता में भी संशोधन कर बालिकाओं के विरुद्ध शोषण को एक गंभीर अपराध माना गया तथा जुर्माना और कम से कम 10 साल के कठोर कारावास से दंडित करने का प्रावधान भी किया गया, जिसे आजीवन कारावास तक बढ़ाया जा सकता है । पोक्सो (POCSO) अधिनियम, 2012 तथा 2019 में संशोधन उपरांत प्रथम बार न केवल बालिकाओं अपितु बालकों के विरुद्ध शोषण को भी दंडित करने के लिए प्रावधान समेत सभी बच्चों के नैतिक व मौलिक अधिकारों की रक्षा को अमलीजामा पहनाया गया । चूंकि बाल-तस्करी एक अत्यधिक संगठित अपराध है जिसमें अंतरराज्यीय आपराधिक नेटवर्क शामिल हैं, इसलिए हाल ही में तैयार किए गए "व्यक्तियों की तस्करी (रोकथाम, देखभाल और पुनर्वास) विधेयक, 2021" विधेयक में राज्यों के बीच निर्बाध सहयोग सुनिश्चित करने के लिए, एक राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर मानव तस्करी विरोधी समिति और एक राज्य मानव तस्करी विरोधी नोडल अधिकारी का प्रस्ताव है । प्रस्तावित विधेयक में लोक सेवकों द्वारा तस्करी, अपराध और कर्तव्य की उपेक्षा की घटनाओं की गैर-रिपोर्टिंग एक दंडनीय अपराध है । विधेयक की कुछ विशेषताओं में यदि पीड़ित एक बच्चा है, तो अपराध की प्रकल्पना शामिल है, पीड़ितों के अनुकूल अदालती प्रक्रियाएं और पीड़ितों की सुरक्षा और देखभाल के प्रावधान शामिल हैं ।

<u>आंकड़ेः</u> 2019 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान था कि भारत में 5-17 वर्ष के 57 लाख से अधिक बच्चे बाल श्रम में लिप्त थे और इस संगठन को नहीं पता कि इनमें से कितने अल्पव्यस्कों की तस्करी होती है । इसके विपरीत, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो ने 2019 के संदर्भ में सभी प्रकार के शोषण को सम्मलित करते हुए बाल तस्करी के केवल 2914 मामलों के आंकड़ों की रिपोर्ट प्रस्तुत की है । वहीं बचपन बचाओ आंदोलन (बीबीए) कहता है कि वर्तमान में 1 लाख बच्चे बाल श्रम में फंसे हुए हैं । दूसरी ओर, (बीबीए) के अनुसार ही, 12 लाख से अधिक अल्पव्यस्क लड़कियां बाल वेश्यावृत्ति के जाल में फंसी हुईं हैं । बाल अधिकार कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि कोविड-19 महामारी के बाद से यह संख्या बढ़ गई है । नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का मानना है कि कोविड-19 महामारी ने बाल तस्करी और जबरन श्रम को बढ़ावा दिया है । जून, 2021 में जारी अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, दो दशकों में पहली बार, कोविड-19 के प्रभाव के कारण दुनिया भर में बाल श्रम के जाल में बच्चों की संख्या बढ़कर 1.6 करोड़ हो गई है । यूनिसेफ ने कहा कि भारत में महामारी और लॉकडाउन के कारण 15 लाख स्कूलों के बंद होने से प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित 2.47 करोड़ बच्चों पर असर पड़ा है और उनके बाल श्रम और असुरक्षित प्रवास में जाने का खतरा बढ़ गया है । कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउंडेशन (के.एस.सी.एफ.) द्वारा 'पुलिस केस डिस्पोजल पैटर्न:पोक्सो एक्ट, 2012 के तहत दर्ज मामलों की जांच', 2017 से 2019 तक पुलिस द्वारा पॉक्सो मामलों के निपटान के पैटर्न का विश्लेषण और राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन.सी.आर.बी.) द्वारा प्रकाशित डेटा और सूचना पर आधारित है । अध्ययन में कहा गया है कि 2017 और 2019 के बीच, उन मामलों की संख्या में वृद्धि हुई है जिन्हें पुलिस ने बिना चार्जशीट दाखिल किए जांच के बाद बंद कर दिया । हर साल करीब 3000 पोक्सो मामले दर्ज और जांच के लिए अदालत तक पहुंचने में विफल हो जाते हैं । अपर्याप्त सबूत या कोई सुराग नहीं है, के आधार पर पुलिस द्वारा उनके मामलों को बंद करने के कारण, प्रत्येक दिन यौन शोषण के शिकार तकरीबन चार बच्चों को न्याय से वंचित कर दिया जाता है । यह भी पता चला कि प्रत्येक पांच में से दो पोक्सो मामलों को पुलिस ने बिना आरोप-पत्र के निपटान या मामला बंद ही कर दिया था और इनके लिए 'मामले सही थे लेकिन अपर्याप्त सबूत या अनसुलझे या सुराग का अभाव', के कारण दर्शाए गए थे । अदालत में दायर अंतिम रिपोर्ट में, 2019 में, इस आधार पर पुलिस द्वारा 43 प्रतिशत मामलों को बंद कर दिया गया था । अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर यूनिसेफ द्वारा जारी 'कोविड-19: बाल विवाह के खिलाफ प्रगति के लिए एक खतरा' नए विश्लेषण के अनुसार, भारत सहित पांच देशों में दुनिया की कुल बाल वधूओं का लगभग आधा हिस्सा है । दशक के अंत से पहले 1 करोड़ अधिक बाल विवाह हो सकते हैं । हाल ही में प्रकाशित राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे/एन.एफ.एच.एस.) की फैक्टशीट देश के विभिन्न हिस्सों में बाल विवाह के बढ़ते प्रचलन को दर्शाता है । सर्वेक्षण से पता चला कि कुछ राज्यों में, 40% से अधिक महिला आबादी की शादी 18 साल की उम्र से पहले ही कर दी गई थी ।

<u>कुछ निर्णयः</u> न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव और न्यायाधीश अनिरुद्ध बोस की न्यायपीठ ने उच्चतम न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत एक मामले में 28 मई, 2021 को रूष्ट होकर कहा कि "इस बड़े देश की सड़कों पर कोविड-19 महामारी के कारण अनाथ, परित्यक्त बच्चे भोजन के बिना भूख से मर रहे थे, उनका कीमती समय बर्बाद हो रहा था ।" शीर्ष अदालत ने देश भर के जिला अधिकारियों को तत्काल इन बच्चों की देखभाल करने, उनकी पहचान करने और उन्हें भोजन, आश्रय और कपड़े जैसी बुनियादी जरूरतें प्रदान करने का आदेश दिया है । उच्चतम न्यायालय की इसी न्यायपीठ ने 7 जून, 2021 को राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एन.सी.पी.सी.आर.) द्वारा निजी व्यक्तियों और संगठनों के माध्यम से कोविड-19 के कारण अनाथ हुए बच्चों को अवैध रूप से गोद लेने के संबंध में मिल रही शिकायतों के बाद हस्तक्षेप करने पर सहमति व्यक्त की है ।

<u>दो शब्दः</u> राजस्थान के झुंझुनू जिले में तीन साल की बच्ची के साथ बलात्कार के आरोप में एक व्यक्ति को मौत की सजा सुनाते हुए और उन लोगों की भी आलोचना करते हुए जो पोशाक को बलात्कार का कारण बतलाते हैं, माननीय न्यायधीश ने एक भावनात्मक कविता लिखी, *"जिस मासूम को देख के मन में प्यार उमड़ के आता है, देख उसी को मन में कुछ के हैवान उतर के आता है । कपड़ो के कारण होते रेप जो कहे उन्हें बतलाऊं मैं, आखिर तीन साल की बच्ची को साड़ी कैसे पहनाऊं मैं । गर अब भी ना सुधरे तो एक दिन ऐसा आएगा, इस देश को बेटी देने से भगवान भी घबराएगा ।"*

{स्त्रोतः साभार,

इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल मेडिसिन; इंडिया टुडे; लीगलसर्विसइंडिया.कॉम; न्यूज़18.कॉम; अर्पन.ओआरजी.इन; व्यक्तियों की तस्करी 2021 रिपोर्टः भारत, अमेरिकी विदेश विभाग की रिपोर्ट, यूएसई.जीओवी; सेवदचिल्ड्रेन.आईएन; आईआरएएलआर.आईएन; द क्रिमिनल लॉ.पीडीएफ, आईआईटीके.एसी.आईएन; सीआरवाई.ओआरजी; इंडियालीगललाइव.कॉम; दसीएसआरजर्नल.आईएन; टाईमसऑफइंडिया.इंडियाटाईमस.कॉम; ज्यूरिस्ट.ओआरजी; दलीफलेट.आईएन; दहिंदू.कॉम; पीपल्सवर्ल्ड.ओआरजी; यूनिसेफ.ओआरजी; डीडब्ल्यू.कॉम; दक्वींट.कॉम; दवायर.आईएन; इंडियनएक्सप्रेस.कॉम; इंडियनकानून.ओआरजी; बॉरएंडबेंच.कॉम; हिंदुस्तानटाईमस.कॉम; इंडियाटीवीन्यूज़.कॉम; एनवाईटाईमस.कॉम; दप्रिंट.आईएन}

श्रीमती गिन्नी अरोड़ा
स.ले.प.अ. (आर.ए.आई.टी. अनुभाग)

विलुप्त होती किताबें

क्या किताबों की दुनिया विलुप्त हो जाएगी ? यह प्रश्न तब उठता है जब विज्ञान या तकनीक का हस्तक्षेप बढ़ जाता है और इसके मायाजाल में हम उलझने लगते हैं ।

इन दिनों पूरा विश्व कोरोना नामक महामारी के जबड़ों में फंसा हुआ है । मनोरंजन के ज्यादातर साधनों ने पाठकों और किताबों के बीच की दूरी कम करने के बजाय बढ़ा दी है । इंटरनेट युग में यूट्यूब, ओटीटी प्लेटफॉर्म आदि से किताबों को बहुत क्षति प्राप्त हुई है । हालांकि इंटरनेट किताबों को प्रमोट करने का सशक्त माध्यम है । इस पर अनेक वेबसाइट हैं जहाँ निःशुल्क या मामूली शुल्क पर पुस्तकें पढ़ी जा सकती हैं व इनका प्रचार-प्रसार किया जा सकता है । इंटरनेट पर जरूरत से ज्यादा निर्भरता ने किताबों की दुनिया को प्रभावित किया है । पहले हम आवश्यक, तथ्यात्मक जानकारी के लिए किताबों की शरण में जाते थे परन्तु अब इंटरनेट पर यह सब सुविधाजनक हो गया है । हज़ारों किताबों की जगह एक हार्ड-डिस्क या चिप ने ले ली हैं ।

वर्ष 2020 के आरंभ में कोविड-19 नामक महामारी के कारण जब राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन हुआ तो किताबों के डिजिटल रूप में मौजूद किंडल जैसे सराहनीय भूमिका निभाई । कोरोना काल में जब लाखों लोग अपने घरों में कैद रहने के लिए बाध्य हुए तो किताबों, अखबारों और पत्रिकाओं के ई-वर्जन काफी हद तक मददगार साबित हुए । ये डिजिटल माध्यम इतनी आशा तो जगाते ही हैं कि जब भी किताबों के भौतिक अस्तित्व पर संकट आएगा, उस समय महत्वपूर्ण सामग्री को नष्ट होने से बचाने का कार्य किंडल जैसे माध्यम ही करेंगें ।

पिछले कुछ बरसों के दौरान नई दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले के परिदृश्य का विश्लेषण करें तो साफ होता है कि आज भी छपी हुई किताबें पाठकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है । हालांकि ऑनलाइन किताबें खरीदने का ट्रेंड पिछले कुछ वर्षों में तेजी से उभरा है ।

ई-बुक्स का प्रचलन भी बढ़ता जा रहा है । लेखक अपनी किताबें प्रकाशित होने के साथ ही डिजिटल किताब भी बाजार में उतार देते हैं । किसी ने सही ही कहा है 'इंटरनेट छपी हुई किताबों की संस्कृति और डिजिटल संस्कृति के बीच एक बड़े पुल का काम कर रहा है ।'

मास्टर कल्प कुमार आर्य,
सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.

शिमला की रेल

एक बार की बात थी । बहुत सारे यात्री शिमला जा रहे थे । सब लोग रेल में बैठ गए । जब रेल रवाना हुई तो उनकी रेल से एक आवाज आई, “सब लोग हाथ ऊपर करें” । कई चोरों ने बोला, “जिसने भी होशियारी दिखाई उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा” । ट्रेन में खामोशी छा गई । अभी तक रेल दिल्ली से रवाना नहीं हुई थी । एक यात्री रेल के दरवाजे से भागा तो उसे गोली मार दी गई । चोर ने बोला, ‘ऐसा हाल होगा अगर कोई भागा’ । चोर ने बोला, ‘ड्राइवर, रोको ट्रेन को, यह ट्रेन तभी चलेगी जब हम चाहेंगें’ । चोर ने बोला, 'सब लोग हमारी बस पर आ जाओ, मैं बार-बार नहीं कहूँगा ।' सब लोगों को बस में क़ैद कर दिया गया । बस में बहुत भीड़ थी, सारे चोर गिर गए, उसी का फायदा उठाकर सारे यात्री वहाँ से फरार हो गए। सब लोग जल्दी-जल्दी अपनी रेल की ओर भागें । एक आदमी ने सब चोरों को बस में लॉक कर दिया । फिर इस बात की पुलिस में खबर कर दी गई । ड्राइवर जल्दी रेल चलाने लगा । एक यात्री ने बोला, 'चिंता मत करो, मैंने बस का गेट बंद कर दिया था और पुलिस में खबर कर दी थी ।' रेल शिमला के लिए रवाना हो चुकी थी । रास्ते में बहुत सारे फूल थे, पेड़ तो भरे हुए थे । इस रेल में खाने की कमी नहीं थी । इतने किस्म के खाने थे कि किसी को भूख लगने ही नहीं दी । सब लोग बहुत खुश थे । सारा समय खाने-पीने में ही गुजर गया । कालका स्टेशन आने में बस पंद्रह मिनट थे । क्या ही नजारे हैं । यह लो, कालका आ गया । दूसरे यात्री ने बोला, 'पर हमें तो शिमला जाना है । हम लोग कालका से टॉय ट्रेन से आगे का सफर तय करेंगे । वहा से टॉय ट्रेन से शिमला दो घंटे लगेंगे ।' दूसरे यात्री ने बोला, 'नहीं फिर दो घंटे लगेंगे । हम लोग होटल बुक कर लेते है । हम लोग स्नो वैली रिज़ॉर्ट में रहेंगे ।' हम लोग शिमला आ गए, सब लोग मॉल रोड़ घूमें । यह तो बहुत सुंदर है । वहां सौरदली पीक देखने गए । वहा पैराग्लाइडिंग भी की । सब लोग बहुत मज़े कर रहे थे । सब लोग वीकैरीगल लॉज गए । यह तो बहुत सुंदर है । अब होटल चलते हैं । कल स्कंदल पॉइंट चलेंगे । जब सुबह हुई तो सब लोग स्कंदल पॉइंट गए । वहाँ एक बेकरी था । सब ने एक-एक केक खाया और फिर स्कंदल पॉइंट घूम लिया । फिर हम वहां से वापिस दिल्ली लौटने की तैयारी करने लगे । अगले दिन सुबह होते ही सब दिल्ली लौट गए ।

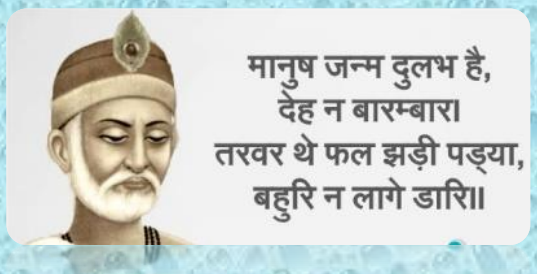

श्री एन. के. शर्मा,
वरि. ले.प. अधिकारी (सेवानिवृत्त)

भला मानुष

अगस्त, 1995 में मेरी पोस्टिंग ए.जी. (ऑडिट) दिल्ली, कार्यालय के प्रशासन अनुभाग में हो गई थी । महेश चंद्र लाल जी यहाँ पहले से ही वरिष्ठ लेखा परीक्षक के रूप में कार्यरत थे । काम में बहुत कुशल, मेहनती और निपुण थे । कितना भी मुश्किल केस हो, वह दिल लगाकर उसे पूरा कर देते थे । व्यवहार में बहुत हँसमुख, मिलनसार थे । किसी साथी की कैसी भी समस्या हो, वह उसे सुलझाने का भरसक प्रयास करते थे ।

मैं तो उन्हें अपने बड़े भाई के समान ही मानता था । हमारा एक-दूसरे के घर सुख-दुःख में आना जाना बना हुआ था । लाल साब से हम अपने परिवारों के मामले भी आपस में बाँट लिया करते थे । लाल साब ने बताया कि उन्होंने अपने छोटे भाई को साढ़े तीन लाख रूपये वर्ष 1990 में उधार दिए थे लेकिन वर्ष 2012 तक उन्होंने रूपए लौटाए नहीं थे ।

लाल साब अक्तूबर 2012 में रिटायर हो गए । लाल साब अपने पिताजी की पाँच भाई-बहनों में सबसे ज्यादा सेवा करते थे । पिताजी की इच्छा अनुसार भाई-बहनों ने मिलकर उनके लिए केशवपुरम में एक एल.आई. फ्लैट वर्ष 1972 में खरीदा था । पिताजी के सेवा उनके इलाज में लाल साब ने कभी कोई कसर नहीं छोड़ी थी । दिसंबर, 2012 में लाल साब के पिताजी का निधन हो गया । अपनी वसीयत में पिताजी ने अपना सारा बैंक बैलेंस और मकान लाल साब के नाम कर गए थे । दूसरे भाई जो कभी पिताजी का हाल-चाल भी पूछने नहीं आते थे, उनको पिताजी के वसीयतनामे से मायूसी और नाराज़गी हुई ।

लाल साब के मन में रूपयों और ज़ायदाद का रत्ती भर भी लालच नहीं है । ईश्वर की कृपा से धन-संपत्ति की लाल साब के पास कोई कमी नहीं थी । लाल साब ने मकान का सौदा किया । करीब 55 लाख रूपयों में मकान बिका । पिताजी के बैंक बैलेंस और मकान की बिक्री को जोड़ कर बराबर पाँच हिस्से किए । इन पाँच हिस्सों में से उन्होंने अपनी छोटी बहन जिसे माता जी की मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी बेटी के समान पाला पोसा था, उसको दे दिया । मेरी बेटी शालू की शादी मार्च, 2013 में होनी थी । लड़का अवि शर्मा और उसके परिवार के कुल तीस सदस्य कनाडा के टोरोन्टो शहर से आने वाले थे । इन सब लोगों का भारत शादी में शरीक होना और भारत में बारी-बारी 15 से 30 दिन रहने का प्रोग्राम था । इन सब के लिए फाईव-स्टार होटल में 15 कमरों का 15 से 30 दिन तक इंतज़ाम उसूलन तो मुझे ही करना था । बैंक बैलेंस और प्रोविडेंट फंड से निकाली गई धनराशि कहीं कम न पड़ जाएँ, ऐसे अंदेशे की वजह से घबराहट हो रही थी ।

शादी का निमंत्रण कार्ड सबसे पहले लाल साब को दिया । लाल साब ने अलग ले जाकर कहा- "शर्मा जी, आपकी बेटी मेरी भी बेटी है । इस बेटी की शादी के लिए मैंने अलग से पाँच लाख रूपए रखे हुए हैं । आप यह रक़म जब चाहे मुझसे ले लीजिएगा । रूपए जल्दी लौटाने की चिंता मत कीजिए । जब भी सुविधानुसार, 2-3-4 साल में लौटा दीजिएगा ।"

लाल साब की बात से मुझे बहुत सहारा मिला । मैंने भी बड़ी नम्रता से उन्हें जवाब दिया- "लाल साब, ईश्वर से दुआ कीजिएगा कि आपके छोटे भाई को पाँच लाख रूपए तो क्या पाँच रूपए भी किसी से उधार ना लेने पड़े । और अगर रूपयों की ज़रूरत पड़ भी गई तो मैं बिना संकोच अपनी ज़रूरत के अनुसार आपसे ले लूँगा ।" लाल साब ने वास्तव में ही ईश्वर से दुआ की । ईश्वर ने उनकी दुआ कबूल कर ली । कनाडा से आने वाले दामाद ने बेटी को फोन पर स्पष्ट कर दिया कि उनके लिए फाईव स्टार होटल में पंद्रह कमरे बुक करा दें । वह टोकन अमाउंट भी वह मुझे वापिस लौटा देंगे । दहेज़, ज़ेव, कैश कुछ भी नहीं चाहिए ।

ईश्वर की कृपा से सब ठीक होता चला गया । मेरे दूसरे दामाद सावन जायसवाल से सलाह मशवरा हुआ । केनेडा से आने वाले लोग एक बार टैक्सी में बैठकर सीधे होटल में ठहरेंगें । दिल्ली में फाईव स्टार होटल का रूम रेंट 10 से 15 हज़ार रूपए के बीच था । इंद्रापुरम में फाईव स्टार होटल में अपनी कंपनी की तरफ से रूम ढाई हज़ार रुपए प्रति दिन के हिसाब से बुक हो जाता है । इस इंतज़ाम से लड़के वालों का कोई भी खर्चा भी बहुत हद तक कम हो जाएगा । लिहाज़ा इंद्रापुरम के एक फाईव स्टार होटल में पंद्रह कमरे बुक कर दिए गए । बुकिंग का टोकन अमाउंट दस हज़ार रुपए जमा कर दिया जाए ।

ईश्वर की कृपा से शादी भली प्रकार से संपन्न हो गई । सभी मेहमानों ने अपने अपने कमरों के रूम रेंट, खाना पीने के खर्च अपने आप अदा कर दिए । दामाद अवि शर्मा ने दस हज़ार रूपए टोकन अमाउंट भी मुझे लौटा दिया । दहेज़, कैश कुछ भी नहीं लिया । उल्टे उन सबने हमारे पूरे परिवार को ढेर सारे उपहार दिये । समधि और समधन भी बहुत अच्छे हैं । मेरी बेटी का एक बेटा और बेटी है । वह बहुत सुखी है । ईश्वर से कामना है कि सभी बेटी वालों को ऐसा अच्छा दामाद और अच्छे समधि मिलें । दूसरी बेटी रश्मि की शादी दिसंबर, 2015 में तय हुई । इस बेटी की शादी में घबराहट बहुत ज्यादा बढ़ गई । बारातियों की संख्या दो हज़ार थी । दिल्ली के किसी होटल में इतने बारातियों का स्वागत, ठहरने का इंतज़ाम मेरे बजट से बाहर था । दामाद सावन जायसवाल और उनके माता-पिता बहुत अच्छे और समझदार हैं । दोनों पक्षों के बीच तय हुआ कि शादी हरिद्वार में एक बहुत ही अच्छे फॉर्म हाउस में की जाए । फॉर्म हाउस का प्रबंध, सजावट और केटरिंग का सारा इंतज़ाम दामाद और समधि जी ने कर दिया । दिल्ली के बजट के एक-चौथाई खर्च में शादी हो सकती थी । लेकिन घबराहट हो रही थी कि कुछ खर्च बढ़ गया तो उसका इंतज़ाम कैसे होगा । लाल साब की बहुत याद आई । लेकिन लाल साब से स्वयं कुछ धनराशि मांगने की हिम्मत भी नहीं थी और साथ-साथ शर्म भी आ रही थी ।

विवाह का निमंत्रण पत्र देने मैं जब लाल साब के घर पहुँचा तो उन्होंने वही बात दुहराई- "रश्मि भी मेरी बेटी है । पाँच लाख रूपए बेटी की शादी के लिए अलग से रखे हैं । जब चाहे माँग लीजिए और जब चाहे लौटा दीजिएगा ।"

मैंने संकोच करते हुए एक लाख रूपए माँग लिए । लाल साब ने कहा- "एक लाख रूपए से क्या होगा और जितना चाहिए बताइए ।" तब मैंने दो लाख रूपए माँग लिए और कहा कि "अगर ज़रूरत पड़ी तो और माँग लूंगा ।" लाल साब ने झट से दो लाख रूपए का चैक मेरे हाथ में थमा दिया ।

विवाह अच्छे रूप से सम्पन्न हो गया । लाल साब के दिए हुए दो लाख रूपए खर्च ही नहीं हुअ थे । एक लाख रूपए मैने उनके बैंक अकाउंट में जमा कर दिए । एक लाख रूपए मैंने आकस्मिक खर्च से निपटने के लिए रख लिए । लाल साब को फोन कर के कहा कि एक लाख रूपए तीन महीने बाद लौटाउँगा । लाल साब ने कहा कि रूपए जब चाहे लौटा दीजिएगा ।

तीन महीने बाद मैंने लाल साब के बैंक अकाउंट में बैलेंस राशि एक लाख रूपए के साथ प्रोविडेंट फंड का बैंक इंटरेस्ट कैलकुलेट करके रूपए 1,06,500/- जमा कर दिए । मोबाइल रूपए 1,06,500/- का क्रेडिट का मैसेज आते ही लाल साब अगले दिन ही आफिस में आ गए । पहले 6,500/- मेरी कमीज़ की सामने की जेब में डालकर बोले- "मैं कोई सूदखोर हूँ, जो बेटी की शादी पर दिए हुए रूपयों पर ब्याज लूँगा ।" यह कहकर वह रोने लगे । मेरी आँखे भी आंसुओं से भर गई । दोनों भाई एक-दूसरे के गले लग गए ।

अगस्त, 2021 में लाल साब का गुरूग्राम के सिनेचर अस्पताल में हार्ट का आपरेशन हुआ है । दो स्टंट लगे हैं । आपरेशन के बाद फिलहाल वह गुरूग्राम में अपने निवास पर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं । मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि ईश्वर उन्हें पूर्ण स्वस्थ रखे । वह दीर्घायु हो ।

श्रीमती चंचल कुमारी,
पत्नी श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.

घरेलू नुस्खे

1. आंवले का शर्बत:-

हम सब आंवले के गुणों से परिचित हैं, यह विटामिन "सी" से भरपूर होता है। इसके साथ इसमे कैल्शियम, आयरन, फ़ॉस्फोरस तथा फ़ाइबर भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह हमारी त्वचा और बालों के लिए बेहद फायदेमंद है। लेकिन यह आचार और मुरब्बा में ही सिमट कर रह गया है । आईये, इसके कुछ नए नुस्खे से आंवले का शर्बत बनाये और अपने परिवार के सेहत का ख़्याल रखें ।

आंवले के 6-8 गिलास शर्बत के लिये सामग्री-

आंवला- 100 ग्राम
गुड़- 100 ग्राम
काला नमक पाउडर- ½ चम्मच
काली मिर्च पाउडर- ½ चम्मच
भुना जीरा पाउडर- ½ चम्मच

विधि:- आंवले उबाल कर बीज अलग कर लें और इसके पल्प (गूदा) का पेस्ट बनाये । अब एक बरतन में आंवले का पेस्ट, गुड़, काला नामक पाउडर, काली मिर्च पाउडर, भुना जीरा पाउडर और 1½ लीटर ठंडा पानी डाल कर सारी सामग्री को अच्छे से मिलकर परोसें और अपने परिवार की सेहत का ख़्याल रखें ।

2. सौंफ और खसखस का शर्बत:-

सौंफ का उपयोग माउथ फ्रेशनेर के रूप में किया जाता है इसके अलावा भारतीय रसोई में सौंफ का उपयोग मसाले के रूप में भी किया जाता है । यह पाचन संबंधी समस्याओं से लेकर आँखों की रोशनी बढ़ाने, वजन कम करने में भी मदद करता है । सौंफ में फ़ाइबर भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है।

सौंफ का शर्बत बनाने की सामाग्री-

सौंफ- 1 कप
चीनी- 4 कप
काली मिर्च- 1 चम्मच
खसखस- 4 चम्मच

विधि :- उपरोक्त सभी सामग्री को ग्राइन्डर की मदद से बारीक पाउडर बनकर डिब्बे में स्टोर कर लें । जब भी शर्बत बनाना हो तो 1 गिलास में ठण्डा पानी डालें और 2 चम्मच सौफ का शर्बत पाउडर डालकर अच्छे से मिलाकर परोसें ।

श्रीमती स्वाति श्रीवास्तव, पत्नी श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी) द्वारा चित्रित प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का चित्र

कुमारी मानस्वी, सुपुत्री श्रीमती मोनिका (स.ले.प.अ.) द्वारा चित्रित 'कोरोना महामारी के दौरान घर पर ही सुरक्षित रहने' का संदेश दर्शाता हुआ चित्र

कुमारी डेज़ी, सुपुत्री श्री नरेश कुमार वशिष्ठ द्वारा निर्मित मातृत्व का रेखा-चित्र

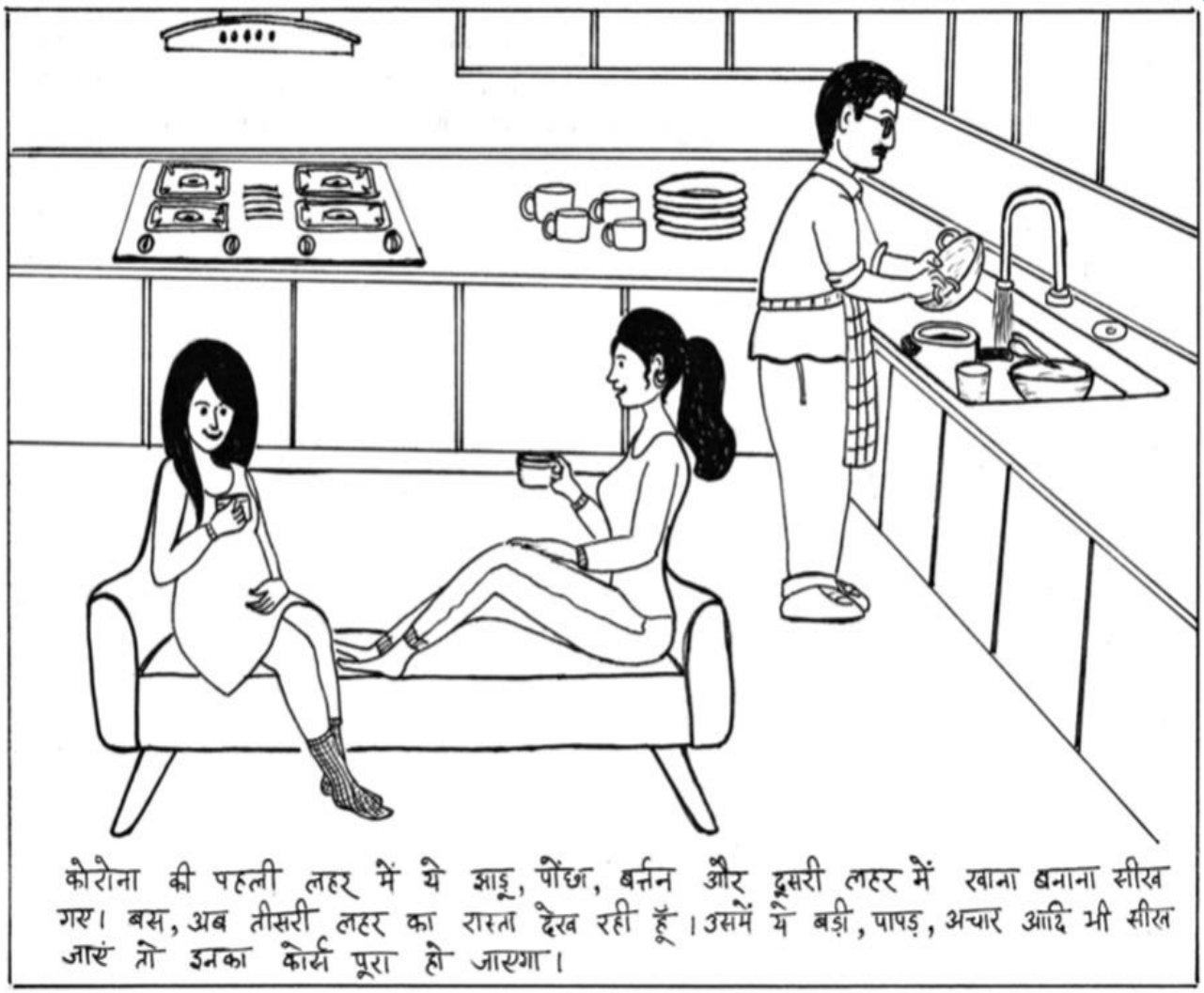

श्री मिहिर रंजन, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी द्वारा चित्रित व्यंग्य चित्र

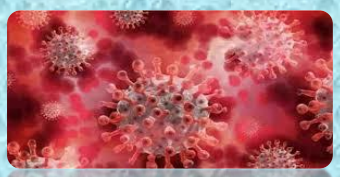

कु. हिमांगी गुसांई,
सुपुत्री श्रीमती विनीता कुमारी

जब कोरोना आया था

जब कोरोना आया था,
मन बहुत घबराया था
खेल-कूद से दूर थे,
कितने हम मजबूर थे।

जब कोरोना आया था,
मन बहुत घबराया था।

हमने ये ठाना है कोरोना को भगाना है,
देश के साथ चलना है,
मास्क लगाकर रखना है,
साबुन से हाथ धोते रहना है,
सेनीटाइज़र का इस्तेमाल करना है।
गंदगी से बचकर चलना है।

जब कोरोना आया था,
मन बहुत घबराया था।

खांसी जुकाम या हो बुखार,
तुरंत इलाज करवाना है,
डरना नहीं घबराना नहीं,
देश का साथ निभाना है,
मिलकर इस कोरोना को भागाना है।

जब कोरोना आया था,
मन बहुत घबराया था।

सबने अपना फर्ज़ निभाया है,
डाक्टर, सिपाही और सफाई कर्मचारी,
कोरोना पर हैं अब भी भारी,
जब तक ना भागेगा ये लड़ाई रहेगी जारी ।

जब कोरोना आया था,
मन बहुत घबराया था।

कोरोना ने हमें बहुत कुछ सिखाया,
घर परिवार में प्यार बढ़ाया,
कम साधनों में जीना सिखाया,
'नमस्ते' का चलन चलाया,
हमको हमसे ही मिलाया ।

जब कोरोना आया था,
मन बहुत घबराया था।

श्री संजीव,
हिन्दी अधिकारी

आओं प्रण करें

आज कविता लिखता हूँ,
मैं, अंतर मन को छूता हूँ,

दर्द देखा इस परिवेश में,
जल संकट के वेश में,

तड़प रहें हैं गाँव-शहर,
पशु-पक्षी, तालाब, नहर,

पानी का संकट गहराया,
देश काल भय से थर्राया,

बाँध-डेम सब सूख रहे है,
नदी-तालाब खो रहे है,

पानी बचाओ, जल बचाओ,
पृथ्वी बचाओ, जीवन बचाओ,

सब नारे, बेनर दिखते है,
बस जुमले-बाज़ी, खोखली बाते,
बस नारे-बाज़ी दिखते है,

सच्चाई सब जानते है,
जल है जीवन, सब मानते है,

लेकिन कीमत नहीं पहचानते है,
सोचों, क्या होगा तब, पेय जल न होगा जब -
सोचों, क्या होगा तब, पेय जल न होगा जब,

क्या, ये जीवन बच पाएगा,
पृथ्वी का अस्तित्व रह पाएगा,

चारों ओर तबाही होगी,
निश्चित धरती की मृत्यु होगी,

क्या, फिर कोई अवतार आएगा,
धरती का कष्ट मिटाएगा,

हे ईश्वर, हे ईश्वर, कृपा करो इस धरती पर,
सबको दो सद्बुद्धि ज्ञान,

पानी बचाए हर इंसान,
व्यर्थ न गवाएँ एक बूंद, रखे सब इसका ध्यान,

आज सबको जल बचाना है,
सुरक्षित कल बनाना है,

आओं, मिलकर करें ये प्रण,
पानी बचाना है सबका धर्म,

अपना धर्म निभाएंगे हम,
पृथ्वी को बचाएंगे हम - पृथ्वी को बचाएंगे ॥

श्री सरजीत सिंह सभरवाल,
पिता श्री यजुवेन्द्र सिंह, स.ले.प.अ.

सिपाही

सरहद पर जो तनकर खड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा
वां है दर्जा-ए-हरारत सिफर
है बर्फ, धुन्ध है और कोहर
सांस लेना वहां मुश्किल बड़ा
फिर भी रहता तू तनकर खड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा ॥

पहाड़ जंगल बियाबान हो
हर तरफ छाया सुनसान हो
खौफ़ लाता न दिल पर ज़रा
रहता हरदम तू तनकर खड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा ॥

तेरे जिम्मे है कार-ए-गिरां
मां की इस्मत का तू पासबान
कौम सोती तू रहता जगा
दीवार सा तू रहता अड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा ॥

देश प्यारे की तू आन है
बढ़ाता तिरंगे की तू शान है
मुड़के पीछे देखता ही नहीं
रहता दुश्मन की आंखों में आंखें गड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा ॥

है निडर तू हिन्दी जवां
हिन्दू है या सिख मुसलमां
लाडले मां को सब बा-वफा
जां निसारी में हर दूसरे से बड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा ॥

मां का तू लख्त-ए-ज़िगर
बाप का तू बहादुर पिसर
सदा जोश से तू रहता भरा
हौसला तेरा फौलाद से भी कड़ा
है सिपाही दिलावर बड़ा ॥

श्रीमती सरिता,
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक (आयकर समूह)

मेरा खूबसूरत समाज

आज मेरी जो हालत है
पता तुझे (समाज) भी है
और मुझे भी है,
बस फर्क इतना है कि
तू (समाज) चुप रहता है
और मैं कह देती हूँ ।

कहीं मिलती हूँ मैं खून से लथपथ
कहीं मिलती हूँ मैं अधजली सी ।
जब मैं खून से लथपथ मिली थी
उस वक्त मेरी उस घायल शेरनी (मेरी माँ)
की जो हालत थी
फिर भी वो चुप थी,
उसकी हालत का पता तुझे भी है
और मुझे भी.....
बस फर्क इतना है कि.....

कहीं तू बता देता है मेरी सीमा मुझे
कहीं मैं संस्कारों में दबी बोल नहीं पाती,
मैं बस चुप रह जाती हूँ ये सोचकर कि
यही ज़िंदगी है मेरी ।

आ तुझे चुपके से बता दूं
कड़वी सच्चाई तेरी,
तुझे लगता है डर, कहीं कर ना लूं
मैं बराबरी तेरी
यही कारण है कि आज जो हालत है मेरी पता तुझे भी है
और मुझे भी.....
बस फर्क इतना है कि.....

तू खुद को इतना भी ना समझ
मेरे बिना क्या वज़ूद है तेरा,
औरत के एक कदम चलने को
कदम लड़खड़ा जाता है तेरा

बस और कितनी तारीफ़ करूं मैं तेरी
आज मेरी जो हालत है पता तुझे भी है
और मुझे भी है,
बस फर्क इतना है कि
तू (समाज) चुप रहता है
और मैं कह देती हूँ ।

श्रीमती कुसुम चौहान,
बहन श्रीमती विनीता कुमारी, लेखापरीक्षक

कुछ लम्हें

1. *सपनों की दुनिया इतनी सुंदर क्यों होती है,*
   जिसमें न, आँसू न परेशानी होती हैं,
   रूआंसे मन की सुबकियां भी शांत होती हैं,
   थरथराते होठों की बोली भी स्थिर होती हैं,
   सपनों की दुनिया इतनी सुंदर क्यों होती है ।

2. *हर वक्त मन में चलने वालों का प्रश्नों का उफान क्यों रूक जाता है ?*
   टेढ़े-मेढ़े, उल्टे-सीधे दिल को बोझिल करने वाली बातों का तूफान क्यों थम जाता है ?
   तुम ही कहो न सखी, सपनों की दुनिया....

3. *आज फिर उसे मैं बहुत बुरी लगी हूँ ।*
   मैं घर से बाहर की दुनिया देखने चली हूँ ।
   अपने कुछ अनसुलझे सवालों के जवाब ढूंढने चली हूँ ।
   सोचते-सोचते ही आज, मैं बिना दुपट्टे के निकली हूँ ।
   आज फिर उसे मैं बहुत बुरी लगी हूँ ।

4. *एक तेरे होने से ही मेरा रूतबा बरकरार है,*
   मेरे हमसफर तू ही मेरे जीवन की आस है ।

5. *बदलते वक्त की तरह बदलेंगे तेरे ख्यालात पर,*
   बस-ए-दोस्त दिल के कोने में उम्मीद को महफूज़ रखना ।

6. *सोच तो बहुत दूर है मंज़िल*
   चलूं तो कुछ भी नहीं
   मेरी मंज़िल आ रही हूँ मैं...

7. *जब खुशियां लुटने लगती हैं*
   जैसा चाहूं वैसा नहीं कर पाती
   मन के द्वार बंद हो जाते हैं
   अनंत सुख, अनंत दुःख दे जाता है
   अपने ही सवालों में सवाल बनने लगती हूं
   उत्तर भी निरूत्तर हो जाता है ।
   उस छोटे से छुपे-छुपे लम्हों में मुझे
   मेरे बचपन तू बहुत याद आता है ।

8. तू कहता है न कि अब मैं बदलने लगी हूँ
तो सुन जितने गौर से मेरा बदलना
देखता है न तू, उतने ही गौर से अपने
गुनाह देख तेरे दिए ज़ख्मों का मुझे
अब ज़िक्र भी ग्वारा नहीं जा अब तुझे
छोड़ दिया तेरे हाल पर अब तू मेरा नहीं ।

9. वक्त के दिए घाव हैं वक्त आने पर भर जाएंगें
तू ही बता ए ज़िंदगी तुझसे बचकर भला कहाँ जाएंगें ।

10. सोचते थे इतिहास रचते लोग कैसे होते होंगें
आपसे मिले तो जाना ऐसे होते होंगें ।

11. माँ मैं कहीं भी रहूँ तू मेरी आंखों में रहना
दुनिया की इस धूप में तू मेरा आंचल बनना ।

12. मैं चुप रहूं तो बेहतर है
बोलती हूँ तो अपने बेनकाब होते हैं
सुना है दीवारों के भी कान होते हैं ।

13. लाख दबाओ हुनर को वो जाता नहीं
और लाख सिखाने से भी आता नहीं ।

14. मुझे अब रकीबों से कोई गिला न रहा
आज मेरे खुदा ने मुझसे कुछ ऐसा कहा ।

15. तेरी आँखों में डूब जाने को जी चाहता है
कहने को तो नशा करते नहीं हम
पर आज तेरी आंखों की मय पीने को जी चाहता है ।

16. जीने के लिए मुहब्बत ज़रूरी है
ये मिले किससे....
ये कोई मुद्दा नहीं है ।

17. हौंसलों को इतना बुलंद रखो कि
किस्मत भी तुमसे फरियाद करे
कुछ तो ऐसा करो कि
दुनिया तुम्हें याद रखे ।

श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशा., जी.ई., सू.प्र. व राजभाषा)

आपदा या पुनर्रचना

आसमान में उड़ते पंछी, करते कलरव बिहंस-बिहंस,

गंगा की अठखेली देखो, निर्मल बहती झर-झर-झर ।

क्या कभी देखी थी प्रकृति की, जैसी सुंदर धरा अंबर ।

या पन्नों में हुए थे दर्शन, पलट के पुस्तक कभी-कभी ।

है संभव कि मानव के लिए, तुम विपदा बन कर आई हो,

पर अपना जग है उतना सुंदर, ये तुम ही दिखलाई हो ।

तन लगता था बिन सुटा-मांस, हम ज़िंदा न रह पाएंगें,

अब संग अपनों खा रोटी-दाल, हम बेहतर जीवन पाएंगें ।

देखो जीवन यापन के लिए, कितनी रक़म ज़रूरी है,

फिर किस दौड़ में जुते पड़े हो, जहाँ पल-पल जीवन भारी हैं ।

आओ कुछ सीखें इससे जिसे हम विपदा मान के सहमे हैं,

सामंजस्य रखे संग प्रकृति के, और सुखी ये जीवन जीते हैं ।

श्री अमित कुमार जाटावत,
लेखापरीक्षक

****<u>सूखा पत्ता</u>****

हरा भरा था कभी, आज जमीं पे पड़ा हूं मैं,
हवा का मोहताज कभी सूरज से लड़ा हूं मैं,
चक्र किस्मत का हर रंग दिखाता है यहां,
शाख का सूखा पत्ता पतझड़ में झड़ा हूं मैं।
हरा भरा था कभी.........

था बारिश की बूंदों ने भिगोया मुझे,
कभी आंधी तूफानों ने था धोया मुझे,
बचाने अपने ही अस्तित्व को अड़ा हूं मैं,
अपनी शाख पे मजबूती से जड़ा हूं मैं।
हरा भरा था कभी.........

दास्ताने कई लिखी गई मेरे ही साये में,
परिंदों का घर भी बना पत्तों की छाए में,
गिरा जब डाल से तब और सड़ा हूं मैं,
साये न रहे मेरे लोगो के पैरो में पड़ा हूं मैं।
हरा भरा था कभी.........

देख इन्हें महसूस क्यों ये व्यथा होती है,
घर के बुजुर्गो की भी यही कथा होती है,
जिनके साये तले पला और बड़ा हूं मैं,
उन्हें वृद्धालय में भेजा दिल से कड़ा हूं मैं।
हरा भरा था कभी.........

श्रीमती शालिनी दहिया,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

आखिरी पाती

लो ये है मेरी आख़िरी पाती,
विचार तो थे पर शब्द नहीं बुन पाई ।

तुम चाहते थे मैं लिखूं शहीद सैनिक के बच्चे की कहानी
या बारंबार लिखूं चारदीवारों में सिसकती महिलाओं की कहानी ।
नहीं लिखना मुझे ऐसा जिसे मैंने जिया ही नहीं
नहीं लिखनी मुझे ऐसी रची-गढ़ी झूठी-मूठी कहानी ।

तुम चाहते थे मैं लिखूं कितना सुंदर है ये समाज
या मैं लिखूं ऐसा के रख लूं मां की ममता या पितृ-स्नेह की लाज ।
नहीं लिखना मुझे ऐसा जिसके लिए कुछ बचा नहीं लिखना
नहीं लिखना मुझे ऐसा जिसे देख कोई पलट देगा पन्ना ।

तुम चाहते थे मैं लिखूं मनोहर मनोरम चंपक वाली कहानी
या मैं लिखूं रिमझिम बरसात या बारिश का पानी ।
नहीं लिखना मुझे ऐसा जो मुझे मोहता ही नहीं
नहीं लिखना मुझे ऐसा जो मन आँगन को भिगोता नहीं ।

तुम चाहते थे मैं लिखूं गुड्डे-गुड़ियों की कहानी
या फिर ऐसा जो छुपा ले अमलीजामे की कहानी ।
नहीं लिखना मुझे ऐसा जो मेरे सिद्धांतों पर उतरता नहीं
नहीं लिखना मुझे ऐसा जो मेरे मानकों में जंचता नहीं ।

मुझे लिखनी थी समाज की असलियत की कहानी
या फिर दर्द से बिलखते बच्चों की दारूण कहानी ।
लिखना था इस सिस्टम की कमियों की कहानी
लिखना चाहती थी झूठे समाज की असली कहानी ।

लो अब पकड़ो मेरी ये आखिरी पाती
इसके बाद नहीं लिखूंगी कोई सच्ची या झूठी कहानी ।
या तुम्हारे धरातल पर जो सटीक बैठे वो कहानी
और हां ये थी मेरी आख़िरी और पहली पाती ।

श्री विश्वेन्दु,
स.ले.प.अ. (सी.आर.ए.डी.)

भारत के वीर

भारत माँ के पूतों ने फिर
बलिदानी सेज बिछाई है
वीरों ने चीथड़े उड़वा कर भी
मिट्टी की लाज बचाई है ।

कुठाराघाती भेड़ियों के झुण्ड
जब-जब कन्धों पर धोखे से जा बैठे
माँ के शेरों ने केसर झटकाकर
सबको औक़ात दिखाई है ।

छद्म युद्ध में प्राण लुटाकर
इन वीरों की आहुति ने फिर
देश की आन बचाई है ।
युद्ध भूमि में भिड़कर इनसे
सबने मुँह की खाई है ।

रण-भेरी की धुन पर हरदम
मनवाया अपना लोहा और दम ।
शत्रु शीशों का मान मिटाकर
विजय पताका लहराई है।
विश्व पटल पर वीरों ने
तिरंगे के रंगों की गरिमा और बढ़ाई है ।

श्री अमित कुमार जाटावत,
लेखापरीक्षक

"पथिक"

पथ में बिछे हो कांटे चाहे,
धरती उगल रही अंगार,
बाण गर्मियों के हो चाहे,
गरजे बिजली की झंकार,
डरना रुकना थकना कहां,
पथिक की बस यही पुकार।
पथिक की बस यही पुकार।

उकरे छाले पैर में चाहे,
या पसीने की फुहार,
रूह तड़पे प्यास से चाहे,
भूख मचा रही हाहाकार,
डरना रुकना थकना कहां,
पथिक की बस यही पुकार।
पथिक की बस यही पुकार।

हो अंधेरा काली रातें,
लगा मुसीबतों का अंबार,
पर्वत नदी अड़े हो जिद्द पे,
हो जंगल में शेरों की हुंकार,
डरना रुकना थकना कहां,
पथिक की बस यही पुकार।
पथिक की बस यही पुकार।

हौंसला मन में किए हुए,
आंखों में सपनों की दरकार,
मेहनत लगन कर्म से पाएं,
सफलता को देते आकार,
डरना रुकना थकना कहां,
पथिक की बस यही पुकार।
पथिक की बस यही पुकार।

श्रीमती नेहा,
एम.टी.एस. (आयकर नियंत्रण)

आँखें कहती हैं

तुम्हे पूरी दुनिया दिखाती, तेरी पसंद मुझे भी भाती ।
जो तुझे हो नापसंद, मैं उसे भी पहचानती हूं ।
जब तुम होते हो खुश, मैं बहुत ही इतराती हूं ।
और तुम्हे दुःखी पाकर, मैं खुद को खूब रुलाती हूं ।

कभी-कभी तुम्हारी बातें, कहे बिना ही जताती हूं ।
बोलने की न पड़े जरूरत, इशारे ऐसे कर जाती हूं ।
लोग कौन व जगह कौन सी, मैं ही पहचान कराती हूं ।
खिल गई धूप या हो गई शाम, मैं ही तो तुम्हे बताती हूं ।

पूरा दिन लेते हो मुझसे काम, एक पल भी न देते आराम ,
जो लैपटॉप से हटे, तो मोबाइल में अटके ,
किताब-पेपर से हटे, तो टीवी से चिपके ,

तुम इतना मुझे थकाते हो, पलकें भी कम झपकाते हो ,
सोचो जरा एक क्षण रुककर, पीड़ा होती है मुझे थककर ,
दिन तो दिन अब रात भी, तुम मुझे न सुलाते हो ,
पूरे तन को आराम दिलाते हो, और मुझे मोबाइल में डुबाते हो ।

करते-करते खूब थकाकर, बीमार मुझे कर जाते हो ।
इसके बाद फिर जीवन भर को, चश्मे का बोझ बढ़ाते हो ।।

श्रीमती सरिता,
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक (आयकर समूह)

जब से मैं बोलने लगी हूँ

जब से मैं बोलने लगी हूँ,
सबके दिलों में चुभने लगी हूँ ।

जब मैं बिना अहसासों के जी रही थी,
चुपचाप दिन भर सारा काम कर रही थी,

तपते शरीर में भी सबकी सेवा कर रही थी,
अपना दर्द किसी से नहीं कह रही थी,
रोज़ तिल-तिल के मर रही थी,
तब तक ही सबको अच्छी लग रही थी,
जब तक मैं चुपचाप रह रही थी ।
कौन है, जिसमे कमी नहीं है,
आसमां के पास भी तो जमीं नहीं हैं ।
इंसान की सबसे बड़ी हार उसी वक्त हो जाती है,
जब खुद सही होकर भी गलत लोगों के आगे सर झुका लेती है,
क्यों जब घुटन होने पर अपना वज़ूद खत्म कर देगी,
तब भी यही कहा जाएगा कि
"भले घर की होती तो ऐसा ना करती"
अब ऐसे सवालों की बौछारों से दूर हट गई हूँ,
तब तक ही अच्छी हूँ जब तक मैं चुप रहती हूँ ।

अब जब से मैं बोलने लगी हूँ,
अपने हक के वास्ते दिल की आवाज़ सुनने लगी हूँ,
सबको उनके बेतुके सवालों के जवाब देने लगी हूँ,
अपना अच्छा बुरा सब समझने लगी हूँ,
अपने मन की बात सबके सामने रखने लगी हूँ ।

सही मायने में अब ज़िंदगी जीने लगी थी,
फिर वही बड़े-सयानों की बातें सुनने लगी थी,
"कैसे घर से आई है, क्या यही संस्कार लाई है"
इसलिए अब मैं अपने दिल की आवाज़ सुनने लगी हूँ,
सबको उनके बेतुके सवालों के जवाब देने लगी हूँ,
जब से मैं बोलने लगी हूँ,
सबके दिलों में चुभने लगी हूँ ।

श्री अमित कुमार जाटावत,
लेखापरीक्षक

"मां"

मां में संसार देखा है

मां तुझ में मैने हर अवतार देखा है,
बस्ता हुआ उसमे सकल संसार देखा है ।

देखा है तुझे जब मैंने दुख में रोते हुए,
तब अम्बर से गिरता हुआ सैलाब देखा है ।

भीषण गर्मी के कहर से मुझे बचाने को
आंचल का तेरे सूरज से टकरार देखा है ।

उगते सूरज की पहली किरण में मैंने,
चमकती तेरी बिंदिया का आकार देखा है ।

घोर अंधेरी काली रातों का जब डराना मुझे,
तेरी गोद में ली गई नींद का व्यापार देखा है।

चहेरे पे तेरे झुरियों की हर कहानी में मैंने,
खेलते अपने बचपन को हर बार देखा है।

देखा होगा पत्थरो में बसे भगवान को सबने,
मैने तुझमें ही ईश्वर का सब चमत्कार देखा है।

श्रीमती अर्चना बिंदरू,
वरि. लेखापरीक्षक

सोचा भी न था

सोचा भी न था -
पराये सपनों की लालसा करते-करते
कल्पतरू की छांह बाँह में भरते-भरते

मेरा शब्दहीन व्यक्तित्व फट जाएगा ।
क्षण में कट जाएगा-
आकाश और धरती से संबंध ।

सोचा भी न था -
शीतयुगीन सूरज़ की परिक्रमा करते करते
अनायास ही उसे निगल जाऊंगा
असहनीय तपन से पिंघल जाऊंगा ।

मेरा अर्थहीन अस्तित्व घिस जाएगा,
क्षण में रिस जाएगा-
लंबे जीवन का संचित दो बूँद अमृत ।

सोचा भी न था -
गिरवी रखी चेतना पर जंग चढ़ जाएगा,
नस नस से मेरी लहू का रंग उड़ जाएगा ।

भेंट चढ़े 'आदेश' ऊंची इमारतों की-
तिज़ोरियों में बंधक हो जाएंगे ।

सोचा भी न था -
कि अचानक एक दिन उधार का जीवन दम तोड़ देगा ।
और मुझे अपनी टूटन को-
रोज़ अभाव के टांकों से सीना पड़ेगा,
यूं ही जीना पड़ेगा ।

श्री विश्वेन्दु,
स.ले.प.अ. (सी.आर.ए.डी.)

कोरोना और हम

सोने का यह शेर हमारा
सपनों का यह देश हमारा
ज्ञान-विज्ञान सभ्यता का उद्‌गम
युग-युग से हरदम
पुरुषार्थ और परमार्थ यहाँ
परमात्म मिलन की
राह बताए जाते हैं

ये अपने सपनों का भारत
जनहित और आत्मसम्मान हेतु
सिद्‌धि, शांति, संग्राम वरण को
पौरुष और बलिदान की बातें
यहाँ घर-घर सिखलाई जाती है

उद्‌दाम संसाधनों से लावण्यित
काल चक्र मे बेहाल हुआ फिर
जनमानस को आज जहाँ
ना हवा, ना दवा ही मिल पाती है
साँसों की बोतल के बदले
ठगी से ज़हरीले डब्बे बेचे जाते हैं

रिश्तों में अब स्नेह कहाँ
पावन पार्थिव देह यहाँ
आज पन्नियों में बंद कर
रस्सियों में बाँध
सड़कों पर खींचे जाते हैं

राम-रहीम का नाम भूलकर
हाहाकार स्वरों से गुंजित
लाशों की बारात भटकती
श्मशानों और क़ब्रिस्तानों में
अनचाहे फेंकी जाती हैं

आसमान में उड़ने वालों को
कंधों का सौभाग्य नहीं
अब मरने का भी मोल चुका
क़ब्रों और चिंताओं मे
ऐसे ही झोंके जाते हैं

जो गए शरीर को त्याग
छोड़ जगत परलोक चले।
लेकिन स्वार्थ और लोभ वश
आत्मा- मुक्त यहाँ बाज़ारों में
बहुतेरे शरीर भटकते जाते हैं

अब नेता बन कर अभिनेता
संचार तंत्र से शक्ल दिखाने
जनता को यूँ ही बहलाने
रोज़ नई कहानी बतलाते हैं

किसको दोषी कहें यहाँ ?
भीड़ तंत्र के नेताओं को !
या लोभ-तंत्र के मतदाताओं को!
सत्ता और लोलुपता के द्वंद्व-वश
सब सुधार धरे रह जाते हैं

लोकहित की बात हवा है
कहते हैं ! इस लोकतंत्र में
राजनीति के नाम बहस को
मुफ़्तख़ोरी, तिलक-टोपी, धर्म और जाति है।

गत वर्ष महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति) कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण

1. श्री रामपाल सिंह, पर्यवेक्षक (दिनांक 30.06.2020 को सेवानिवृत्त हुए)

2. श्री महाबीर सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (दिनांक 30.06.2020 को सेवानिवृत्त हुए)

3. श्रीमती उषा अग्रवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (दिनांक 31.01.2021 को सेवानिवृत्त हुए)

हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां

1. राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

2. भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

3. भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

अमित शाह (गृह मंत्री)

4. हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

5. हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

पुरुषोत्तम दास टंडन

6. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत

7. हिंदी राष्ट्रीय-एकता का प्रतीक है।

डॉ. संपूर्णानंद

8. भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

9. हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।

मौलाना हसरत मोहानी

10.हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद

11.समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

12.वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।

पीर मुहम्मद मूनिस

13.देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

14.हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

15.आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

कार्यालय भवन